वर्ष 45
अंक 8
अगस्त 2018
हँसती दुनिया
₹15/-
स्वतन्त्रता दिवस
की
शुभकामना

हँसती दुनिया

● वर्ष 45 ● अंक 8 ● अगस्त 2018 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200

Fax: 01127608215

Email: editorial@nirankari.org

Website: http//www.nirankari.org

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries :

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. राजमाता जी के अनमोल वचन
7. बाबा अवतार सिंह जी के पावन वचन
16. निरंकारी बाल समागम
29. समाचार
44. पढ़ो और हँसो
46. कभी न भूलो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कविताएं

9. स्कूल मुझे जाना है मम्मी
: महेन्द्र जैन

9. तितली
: गोविन्द भारद्वाज

17. हम अटूट हैं, अविनाशी हैं
: अशोक जैन

26. प्यारा भारत
: गोविन्द भारद्वाज

26. पूज्य भूमि भारत
: अंकुश्री

31. स्वतंत्रता दिवस प्यारा, तिरंगा लहराएंगे
: हरजीत निषाद

39. भारत देश महान है, हम कर्णधार हैं...
: रूपनारायण काबरा

47. जय-जय भारत देश
: महन्थ राजपाल

50. दो बाल कविताएं
: गफूर 'स्नेही'

कहानियां

8. जब हार, जीत में बदली
: मदन देवड़ा

10. आजादी के बेर मीठे
: साबिर हुसैन

20. रिश्ते प्यार के
: कृष्णकुमार मिश्र

21. साहसी किशोर
: राजकुमार जैन

22. बहादुर महारानी
: लाल सिंह

30. किसान के लिए जगह नहीं
: अनिता जैन

32. सेठ की चतुराई
: चित्रेश

विशेष/लेख

18. अस्सी वर्षीय वीर योद्धा...
: रूपा रानी

19. स्वराज्य महामंत्र के नायक...
: जयेन्द्र

27. लाल पाण्डा
: डॉ. परशुराम शुक्ल

38. चकदिल
: दीपांशु जैन

40. जिराफ
: पुष्पेश कुमार

42. रक्षाबन्धन
: मूलचन्द कर्दम

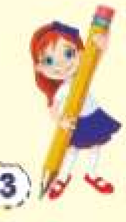

सबसे पहले

सकारात्मक कार्य करें

अध्यापक जी ने कक्षा में प्रवेश किया और वे चुपचाप 'ब्लैक बोर्ड' के पास खड़े हो गए। उस समय सभी बच्चे आपसी बातों में इतने मस्त थे कि किसी को भी शिक्षक जी के आने का आभास तक न हुआ। किसी ने भी उनकी तरफ नहीं देखा। हर कोई अपनी बात कह और सुन रहा था। कुछ देर बाद अध्यापक जी ने ही उनका ध्यान अपनी तरफ खींचा तब जाकर बच्चों का ध्यान उनकी तरफ गया। सभी बच्चों ने खड़े होकर अभिवादन किया और अपने-अपने स्थान पर बैठ गए।

अध्यापक जी ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए पूछा कि आप ऐसी कौन सी चर्चा कर रहे थे जिससे आप में से किसी को भी मेरे आने का आभास तक नहीं हुआ। जरूर ही कोई महत्वपूर्ण बात रही होगी जो आप कर रहे थे। आप वह बात मुझे भी बताएं।

अब सभी विद्यार्थी सोचने लगे कि 'सर' को क्या कहा जाए? बच्चे एक-दूसरे को इशारा करने लगे कि तू कुछ कह दे... फिर एक-दो ने अपनी-अपनी बात कही भी कि हम सभी क्रिकेट मैच, हॉकी, फुटबाल मैच के बारे में बात कर रहे थे जो कि आजकल टी.वी. पर भी आ रहा है।

किसी ने कहा कि हम छुट्टियों में घूमने जाएं या न जाएं तो किसी ने कहा कि दूसरी कक्षा के बच्चे बहुत शरारती हैं इत्यादि-इत्यादि...।

अध्यापक जी ने कहा कि मैं आपको पांच मिनट और देता हूँ बातें करने और सोचने का, फिर आप मुझे बताएं कि इस तरह की बातचीत से आपको क्या मिला?

सभी बच्चे चुपचाप बैठे रहे। फिर 'सर' ने बताया- हमें बातचीत अवश्य करनी चाहिए क्योंकि यह बोलचाल ही हमारी जानकारी का माध्यम है परन्तु हमें कब बोलना चाहिए, क्या बोलना चाहिए और कैसे बोलना चाहिए इसका ज्ञान भी होना आवश्यक है। हर समय बोलते रहकर हमें अपनी शक्ति और ऊर्जा का अपव्यय नहीं करना चाहिए।

अध्यापक जी ने एक उदाहरण देकर समझाया कि एक दार्शनिक के पास उनका एक परिचित व्यक्ति आया और बातचीत का सिलसिला आरम्भ हो गया। फिर उस व्यक्ति ने कहा- मैंने आपके एक मित्र के बारे में कुछ सुना है।

जैसे ही वह व्यक्ति बताने लगा कि क्या सुना है। दार्शनिक महोदय ने कहा कि आप मुझे वह बात अवश्य सुनाएं लेकिन उससे पूर्व मेरी बात भी आप सुन लें कि जो भी आप बताने वाले हैं क्या वह पूर्णत: सत्य है, क्या वह बात अच्छी है या उसके गुणों को उजागर करती है, क्या वह बात बहुत ही उपयोगी है, जिससे किसी का भला हो सकता है। यदि ऐसा हो तभी आप मुझे वह बात सुनाएं अन्यथा मैं क्षमा चाहूंगा।

आए हुए व्यक्ति ने उत्तर नकारात्मक दिए।

इस पर दार्शनिक बोले- जो बात न सत्य है, न भली है, न उपयोगी है और न ही किसी की अच्छाई को प्रकट करती है उसकी जानकारी लेने में मैं अपना समय नष्ट नहीं कर सकता।

प्यारे साथियों! हमें अपने जीवन में सार्थक बातचीत ही करनी चाहिए और केवल वही चीज जो अच्छी भी है और उपयोगी भी उसी के ग्राहक बनना चाहिए।

जैसे सभी को बोलने और अपनी बात कहने की स्वतंत्रता है, इसी प्रकार हमें भी इस बात की आजादी है कि हम कौन-सी बात सुनें, मानें और अपनाएं। यही सीख अगर हम अपनाएंगे तो हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा। हम सकारात्मक कार्य करेंगें तो हमारी ऊर्जा, शक्ति एवं समय की भी बचत होगी जिससे हम आत्मचिन्तन कर सकेंगे और अपनी स्वतंत्र सोच से उचित निर्णय भी ले सकेंगे।

– विमलेश आहूजा

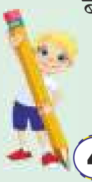

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 170

कई वारी तूं कीड़ा बणयों रींग रींग के चलयों जां।
सोच खां तेरी की सी हालत सप्प ते ठूंआं बणयों जां।
घोड़ा खोता कुत्ता बणयों बणया एं तूं मज्झ ते गां।
चमगादड़ ते उल्लू बणयों कई वारी बगला ते कां।
गंदगी विच कुरलांदा सैं तूं भुल्ल के रब सच्चे दा नां।
कहे अवतार प्रभु नूं मिल के हुण तां पा लै उच्ची थां।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जीवन चक्र बहुत जटिल है। जन्म-मरण के चौरासी लाख योनियों के चक्र में जीव फंसा रहता है। जन्म के बाद मृत्यु, मृत्यु के बाद पुनः जन्म और इस तरह यह क्रम चलता ही रहता है। जन्म-मरण के इस चक्र में कई बार इन्सान कीड़ा बनता है और जमीन पर रेंग-रेंग कर चलता है, घिसटते हुए ही उसका जीवन व्यतीत होता है। इन्सान तू सोच कि कितनी बार तू सांप और बिच्छू बनकर धरती पर विचरण करता रहा। उस समय तेरे शरीर में विष ही विष भरा था। इस प्रकार एक विषधर वाला जीवन या डंक मारकर दूसरों को पीड़ा पहुँचाने वाला बिच्छू का जीवन तू जीता रहा।

बाबा अवतार सिंह जी मानव को जन्म-मरण के इस पीड़ादायक चक्र से उबारना चाहते हैं इसलिए वे इनकी भयावहता बताकर सचेत कर रहे हैं कि इन्सान तू समय रहते सद्गुरु की शरण में आ जा और परमात्मा की प्राप्ति कर ले। यही एकमात्र उपाय है तेरे बचाव का, अन्य कोई तरीका नही हैं इस विकराल जन्म-मरण के चक्र से बच पाने का।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि कई बार तू घोड़ा और गधा बना है तो कई बार भैंस और गाय। कई बार तू घने अंधकार में रहने वाला चमगादड़ बना तो केई बार उल्लू बना और दुख में अपना जीवन बिताता रहा। कई बार तू कीड़े-मकोड़े खाने वाला बगुला बना और कई बार कांव-कांव करने वाला कौआ। इस प्रकार तू इन योनियों में जन्म लेने की पीड़ा भी उठाता रहा और लोगों का तिरस्कार भी सहता रहा। इन्सान तू अपने बीते हुए जन्मों की ओर ध्यान दे कि कितनी गंदगी और चीख-पुकार के बीच तेरा जीवन व्यतीत हुआ। अब जब तूने दुर्लभ मानव जन्म प्राप्त कर लिया है तो इस अवसर का लाभ उठा और सद्गुरु की शरण में आकर ऊँचा स्थान प्राप्त कर ले। यह ऊँचा स्थान मानव जन्म प्राप्त कर लेना भर नहीं है बल्कि इस जन्म में परमात्मा से मिलन ही वास्तविक ऊँचा स्थान पाना है।

बाबा अवतार सिंह जी इस पद के माध्यम से जन्म-मरण की पीड़ा की भयावह स्थिति बताकर मानव-मात्र को सचेत कर रहे हैं ताकि अपना मार्ग भूल चुका मानव सही मार्ग पर आ जाए और प्रभु प्राप्ति के द्वारा जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त कर ले।

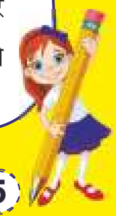

निरंकारी राजमाता जी के **अनमोल** वचन

- ★ जो बच्चे सुबह उठकर अपने माता-पिता के चरण छूकर नमस्कार करते हैं, उनके जीवन में कभी कोई कमी नहीं आती।
- ★ महापुरुषों को अपने बच्चों को सत्संग में जरूर लाना चाहिए ताकि वे अच्छे संस्कार सीख सकें।
- ★ भक्ति का अर्थ है– सम्पूर्ण समर्पण।
- ★ जिन्होंने अपने मन को गुरु के प्रति समर्पित कर दिया है उनके कार्य सिद्ध हो जाते हैं।
- ★ सन्तों का मार्ग सदैव से ही प्यार और नम्रता वाला मार्ग रहा है जो मन को सुकुन और चैन देता है।
- ★ इस निरंकार से जुड़ें और इसके सुमिरण की शक्ति को पहचानें। सुमिरण से सभी काम ठीक हो जाते हैं।
- ★ मानव जन्म बार-बार नहीं मिलता, इसलिए इसकी कद्र करनी चाहिए।
- ★ प्रत्यक्ष गुरु के बिना ज्ञान की उपलब्धि कठिन ही नहीं, एकदम असंभव है।
- ★ अच्छा इन्सान वही है, जो दुखियों की मदद करता है।
- ★ सद्गुरु का हृदय विशाल होता है। वह किसी के अवगुण नहीं देखता, सभी को अपना बना लेता है।
- ★ जिस प्रकार इन्सान को समुद्र के पानी में बैठकर ठंडक मिलती है। उसी तरह सद्गुरु के पास आकर हमारी आत्मा को शान्ति मिलती है।
- ★ गुरु की भक्ति असल में गुरु के उपदेशों को दिन-प्रतिदिन जीवन में ढालने के साथ ही हो सकती है।
- ★ संतो का संग मिलता रहे क्योंकि यही संसार सागर से पार होने का माध्यम है जबकि कुसंगत पतन की ओर ले जाती है।
- ★ सद्गुरु की कृपा से ही इन्सान की भटकन समाप्त होती है।
- ★ भक्त हमेशा दूसरों के गुणों की तरफ नज़र रखता है।
- ★ संतों की संगति से जीवन का सही दिशा में रूपान्तरण हो जाता है।
- ★ अज्ञानता के कारण ही इन्सान आज ठोकरें खा रहा है। इन्सान को राह दिखाने के लिए सन्तजन ही रोशनमीनार बनते हैं।
- ★ सत्य केवल प्रभु-परमात्मा है, बाकी सब असत्य है। असत्य वह वस्तु होती है जो कभी होती है और कभी नहीं। दुनिया के रहने और न रहने पर भी प्रभु रहेगा।
- ★ सन्त पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए भक्ति-पथ पर बढ़ते रहते हैं।
- ★ गुलाब के पौधे में फूल भी होते हैं और कांटे भी। फूल छोड़कर कोई कांटे नहीं चुनता। इसी तरह भक्त भी फूलों को ही चुनते हैं।
- ★ जिस प्रकार फूल खुशबू प्रदान करता है। उसी प्रकार भक्त प्यार, सत्कार और ज्ञान रूपी रोशनी को ही ऊँचा दर्जा देते हैं।

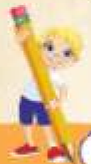

बाबा अवतार सिंह जी के पावन वचन

- ★ सत्संग करने से अज्ञान का नाश होता है।
- ★ भक्त सद्‌गुरु से और सद्‌गुरु भक्त से प्रेम करता है।
- ★ यदि आप दूसरों का उपकार नहीं कर सकते तो अपकार भी मत करो।
- ★ सच्चा सेवक मन, वचन व कर्म में पवित्र और एक समान होता है।
- ★ जिन्होंने निराकार परमात्मा को जान लिया है। उनके हृदय में करोड़ों सूर्यों का प्रकाश हो जाता है क्योंकि उन्हें यह समझ आ जाती है कि संसार की सब वस्तुएं नाशवान और अधूरी हैं।
- ★ दुख अज्ञानता का नाम है जैसे अंधेरा कोई चीज नहीं, इसी प्रकार दुख भी कोई चीज नहीं। प्रकाश हो तो अंधेरा और ज्ञान हो तो दुख नहीं होता।
- ★ प्रभु ज्ञान द्वारा ही निरंकार को जाना जा सकता है।
- ★ किसी से ईर्ष्या नहीं करनी बल्कि सभी से प्यार करना चाहिए।
- ★ यदि आप प्यार का बीज डालेंगे तो प्यार मिलेगा। यदि नफरत का बीज बोयेंगे तो नफरत मिलेगी।
- ★ सोच-समझकर व्यवहार करो। न किसी को धोखा दो, न किसी से धोखा खाओ।
- ★ जो हरि के रंग में रंगे हुए हैं उनमें ही पवित्रता और पावनता है।
- ★ भक्त और भक्ति की महत्ता हर युग में रही है।
- ★ आनन्द वो ही प्राप्त करता है जो अपने मन को इस सत्य के साथ जोड़ रखता है।
- ★ भक्त हर हाल में दातार के रंग में रहता है। उतार-चढ़ाव का असर ग्रहण नहीं करता बल्कि हर हाल में खुश रहता है।
- ★ जैसे गंगा में लीन हो चुका कोई भी जल गंगाजल कहलाता है। इसी तरह से जो हरि के समक्ष खुद को मिटा देता है, वही हरि रूप हो जाता है।
- ★ इस प्रभु का नाम मन के सभी रोगों की औषधि है। जितना इन्सान का नाता इस निरंकार से जुड़ता जाता है, उतना ही मन निरोगी होता जाता है।
- ★ प्रेम एक ऐसी शक्ति है जो किसी भी आत्मा को जीत सकती है।
- ★ जिन्होंने सत्य को जान लिया है उनके लिए कलयुग ही सतयुग है।
- ★ मानवी गुणों को धारण करने से जीवन सुन्दर बनता है।

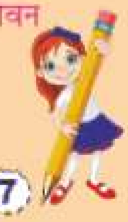

दो प्रेरक-प्रसंग : मदन देवड़ा

जब हार, जीत में बदली

1. जालोर का किला। जोधपुर के उत्तराधिकारी महाराज मानसिंह को जोधपुर का एक अनधिकृत शासक चारों ओर से घेरे हुए था। खाद्य-सामग्री पहुँचाने के रास्ते बन्द कर दिये गये थे। भूखी-प्यासी सेना आखिर कब तक लड़ती।

यह देख मानसिंह से रहा न गया। उन्होंने किला छोड़ने की अनुमति दे दी। पर बीजा नाम के चारण ने किला छोड़ने से इन्कार कर दिया। जब उसे बुलाकर पूछा गया तो उसकी साहस भरी बातें सुनकर स्वयं राजा मानसिंह दंग रह गये। चारण ने जो कहा उसका आशय यह था कि चाहे आकाश फट जाये, धरती चटक जाये तब भी मुझसे यह किला नहीं छूट सकता।

बीजा चारण की शौर्य और पराक्रम से भरी बातें सुनकर राजा मानसिंह का बुझा चेहरा फिर से चमकने लगा। किले को छोड़ने की तैयारियां रोक दी गई।

युद्ध फिर शुरू हुआ। राजा मानसिंह और उनके सैनिक उत्साह और जोश से लड़ने लगे। कुछ देर बाद ही अनधिकृत राजा मारा गया और मानसिंह की हार, जीत में बदल गई।

2. यह प्रसंग महाभारत काल का है। माता विदुला का पुत्र संजय एक छोटे से राज्य का राजा था। पड़ोसी राजा ने उसे कमजोर समझकर उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया। संजय इस युद्ध में हार गया। अपने पुत्र की हार से माता विदुला को बहुत दु:ख हुआ।

एक दिन वह अपने पुत्र से बोली- संजय, तू क्षत्रिय-पुत्र है। क्षत्रिय का धर्म होता है युद्ध में विजयश्री प्राप्त करना या मर जाना। तेरी इस हार ने अपने कुल को कलंकित कर दिया है। कुछ देर बाद ही उसकी माता उसकी पीठ थपथपाते हुए बोली- यदि तू अपने मन में दृढ़-संकल्प करके पुन: युद्ध की तैयारी करे तो सारे साधन फिर जुट जायेंगे। हमारा छिना हुआ राज्य पुन: प्राप्त हो जायेगा। मैं न केवल तेरी माता हूँ बल्कि क्षत्राणी भी हूँ। क्षत्राणी कभी भी अपने पुत्र को उसके कर्तव्य से डिगा नहीं सकती।

अपनी माता की ये बात सुनकर संजय का शौर्य जाग उठा। उसने पुन: युद्ध की तैयारियां आरम्भ कर दी। कुछ ही दिनों बाद उसने एक अच्छी सेना तैयार करके पड़ोसी शत्रु-राजा पर चढ़ाई कर दी। इस बार उसकी सेना के आगे शत्रु-सेना ठहर न सकी, उसके पैर उखड़ गये और सब जान बचाकर भाग गये।

इस प्रकार संजय ने अपना हारा हुआ राज्य पुन: प्राप्त कर लिया।

आम की यात्रा

भारत में लगभग चार हजार वर्षों से उगाये जाने वाले तेरह फल वृक्षों में आम भी एक है। ईसा के चौथी और पांचवी सदी पूर्व भारतीयों द्वारा आम मलाया तथा निकटवर्ती पूर्वी एशियाई देशों में ले जाया गया।

अफ्रीका तथा 'नई दुनिया' में आम को पुर्तगाली ले गये। वहाँ से अट्ठारहवीं सदी के प्रारम्भ में आम ब्राजील पहुँचा।

– प्रस्तुति : कमला देवड़ा

बाल गीत : महेन्द्र जैन

स्कूल मुझे जाना है मम्मी

स्कूल मुझे जाना है मम्मी,
एक नया बस्ता दिलवा दो।
नई ड्रेस और नई किताबें,
पापा से कहकर मंगवा दो।

लंच बॉक्स भी नया दिला दो,
लंच स्कूल में ही खाऊँगा।
अगर स्कूल मैं नहीं गया तो,
सबसे पीछे रह जाऊँगा।

दीदी भैया भी जाते हैं,
मैं क्यों रहूं अकेला घर में।
क्या इतना छोटा हूँ मम्मी–
पड़ा रहूं अपने बिस्तर में?

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

तितली

पंख हिलाती तितली है,
धूम मचाती तितली है।

रंग–बिरंगे फूलों पर,
रंग जमाती तितली है।

काले–पीले भौंरों के,
संग लुभाती तितली है।

पकड़ हवा की डोरी को,
पींग बढ़ाती तितली है।

देख सुहाने मौसम को,
गुल खिलाती तितली है।

चटके जब नन्हीं कलियां,
गुनगुनाती तितली है।

पीती है फूलों का रस,
बड़ी सुहाती तितली है।

कहानी : साबिर हुसैन

आजादी के बेर मीठे

टीनू बंदर जब जंगल के कच्चे-पक्के फल खाता तो उसे उन मदारी के बंदरों की याद आ जाती। एक दिन उछलता-कूदता एक गाँव के निकट पहुँच गया था। वहाँ उसने देखा था– एक मदारी अपने पास बैठे बंदरों को केले, मिठाई और रोटी खिला रहा था। बंदरों के गले में पट्टा पड़ा था जो एक डोरी से बंधा था और डोरी को उस मदारी ने पकड़ रखा था।

उस दिन जंगल में आकर टीनू ने उन मदारी के बंदरों की बड़ी प्रशंसा करते हुए कहा था– मजे तो उस मदारी के बंदरों के हैं जिन्हें न गर्मी की चिन्ता न वर्षा की, न भोजन की तलाश में भटकना। बस आराम से खाना और घूमना।

वहीं बैठे किटू खरगोश ने कहा था– गुलामी के लड्डुओं से आजादी के बेर ज्यादा मीठे होते हैं भइया!

–लड्डू-लड्डू होते हैं और बेर तो बेर ही होते हैं।– टीनू ने कहा था।

टीनू यही सोचता कि वह भी किसी मदारी के पास चला जाये तो न खाने की चिन्ता रहे और न रहने की। टीनू सपने में देखता मदारी उसे केले और मिठाई अपने हाथों से खिला रहा है।

एक दिन टीनू सड़क किनारे पेड़ पर बैठा था तभी उसने देखा एक मदारी एक पेड़ के नीचे बैठा है। उसी के पास एक बंदर और बंदरिया डोरी से बंधे उछल-कूद रहे थे। टीनू ने सोचा यही अवसर है, जब वह भी मदारी के साथ रह सकता है। टीनू खुशी से किलकारी मारता मदारी के बंदरों के पास जा बैठा। मदारी ने जब बंदर को पास बैठै देखा तो उसने तुरन्त उस पर चादर डालकर उसे पकड़ लिया। मदारी को पहली बार ऐसा बंदर मिला था जो बड़ी आसानी से उसकी पकड़ में आ गया था।

–अरे तुम तो खुद ही आकर फंस गये।– मदारी का बंदर आश्चर्य से बोला।

–मैं जंगल में खाने की तलाश में घूमते-घूमते परेशान हो गया था, इसलिए स्वयं यहाँ आ गया। अब मुझे भी बैठे-बैठे बढ़िया खाना मिलेगा।– टीनू बोला।

–गुलामी की जिन्दगी भी कहीं अच्छी होती है, दिनभर इस मदारी के इशारे पर नाचना पड़ता है तब कहीं आधा पेट खाना मिलता है।– मदारी के बंदर ने बताया।

टीनू ने सोचा यह बंदर झूठ बोल रहा है। किन्तु शाम को मदारी ने सचमुच उसे खाने के लिए कुछ नहीं दिया बल्कि डंडा दिखाकर उसे नाचने का इशारा करने लगा। टीनू क्या जाने नाचना? जब वह नहीं नाचा तो मदारी ने उसके तीन-चार डंडे मार दिये। रातभर टीनू भूखा बंधा रहा।

सुबह होते ही मदारी ने टीनू की फिर कसकर पिटाई कर दी जिससे वह डर जाए और उसके इशारे पर नाचने लगे।

–जब तक तुम मदारी के इशारे पर नाचोगे नहीं यह मदारी ऐसे ही पिटाई करता रहेगा और खाना भी नहीं देगा।– मदारी के बंदर ने बताया।

टीनू मन ही मन पछता रहा था कि वह क्यों मदारी के चंगुल में आ फंसा। अब उसे जंगल की याद आ रही थी। वहाँ वह आजादी से उछलता-कूदता घूमा करता था। उसे अब मालूम हो रहा था कि आजादी क्या होती है।

मदारी डंडा लेकर फिर आ गया। टीनू डर के मारे दोनों पैरों पर सीधा खड़ा होकर उछलने-कूदने लगा। मदारी खुश हो गया। वह समझ गया कि वह टीनू को नचा लेगा। उसने एक सूखी रोटी टीनू के आगे डाल दी। टीनू ने किसी तरह वह सूखी रोटी खा ली।

टीनू वहाँ से भागने की युक्ति सोचने लगा। मदारी उसे रोज नाचना सीखाता और पिटाई करता। पिटाई के कारण टीनू का पूरा शरीर दर्द करता रहता और वह रोता रहता। वह सोचता कि किसी तरह छूटकर अपने जंगल में चला जाए जहाँ वह फिर आजादी से रहे।

टीनू ने डोरी काटने की कोशिश की किन्तु वह बहुत मजबूत थी। वह समझ गया था कि अब उसकी जिन्दगी गुलामी में ही बीतेगी लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी थी।

एक दिन टीनू उछला-कूदा तो गले की डोरी कसने लगी, टीनू को तुरन्त एक युक्ति सूझ गई। वह जीभ निकालकर ऐसे लेट गया जैसे उसका गला कस गया हो। तभी मदारी वहाँ आ गया, उसने टीनू की हालत देखी तो वह समझा कि टीनू मरने वाला है। उसने टीनू के गले से डोरी खोल दी। टीनू उठा और घर से बाहर की तरफ भागा। मदारी उसे भागता देख डंडा लेकर दौड़ा लेकिन टीनू भागता ही चला गया और जंगल में जाकर ही रूका। अब वह भी कहता है–

गुलामी के लड्डुओं से आजादी के बेर मीठे।

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

मोनू बस की खिड़की वाली सीट पर बैठा, उसके साथ चंदा और फिर दादा जी। उस दिन मौसम भी बड़ा सुहावना हो गया, वे यात्रा का आनंद ले रहे थे।
कुछ देर बाद, उन्होंने बस में आवाजें सुनी कि एक बच्ची बेहोश हो गई है। मोनू और चंदा चौंक पड़े।
मोनू बोला– देखें तो बच्ची को क्या हुआ है? चंदा और दादा जी ने भी कहा हाँ– हाँ, चलो देखते है!

मोनू ने कहा– मैंने एक पुस्तक में सामान्य उपचार के बारे में पढ़ा था, जल्दी से पानी दो, उसे सीट पर बैठाओ, खिड़कियां खोल दो, उसके पास हवा आने दो।
देखो वह बच्ची होश में आ रही है। चंदा के पास कुछ संतरे थे, उसने एक संतरा बच्ची को दे दिया। बच्ची पहले से बेहतर हो गई थी।
अब मोनू और चंदा बच्ची के साथ खेलने लग गये।
यह देखकर बच्ची के मम्मी–पापा ने उन दोनों का धन्यवाद करते हुए कहा– कितने अच्छे बच्चे हैं, ईश्वर तुम्हारी आयु लम्बी करें।

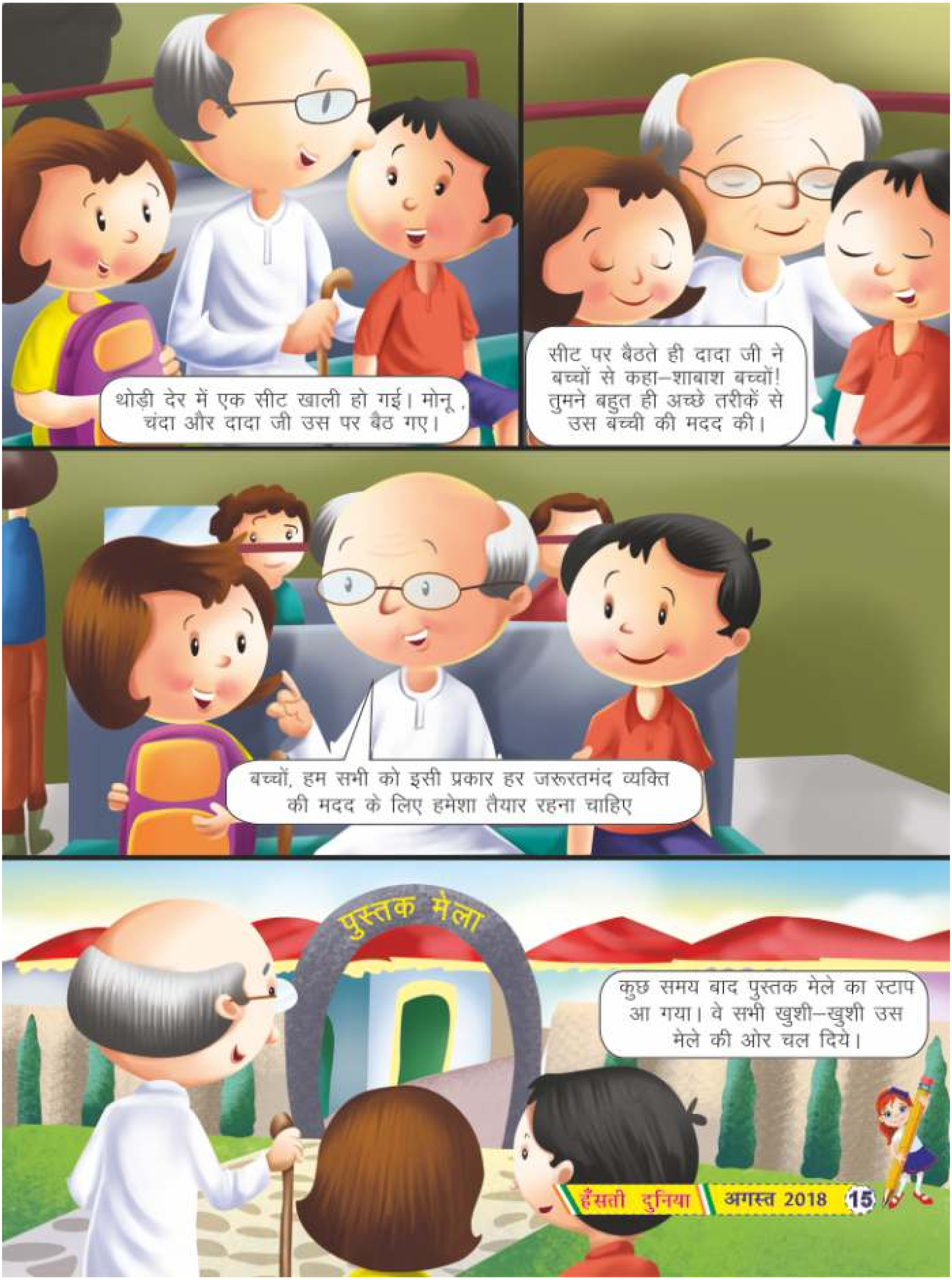
थोड़ी देर में एक सीट खाली हो गई। मोनू, चंदा और दादा जी उस पर बैठ गए।
सीट पर बैठते ही दादा जी ने बच्चों से कहा–शाबाश बच्चों! तुमने बहुत ही अच्छे तरीकें से उस बच्ची की मदद की।
बच्चों, हम सभी को इसी प्रकार हर जरूरतमंद व्यक्ति की मदद के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए
पुस्तक मेला
कुछ समय बाद पुस्तक मेले का स्टाप आ गया। वे सभी खुशी–खुशी उस मेले की ओर चल दिये।

निरंकारी बाल समागम

स्कूलों के ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदुपयोग करते हुए हँसती दुनिया परिवार के सदस्यों ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों (बाल समागम) द्वारा सन्त निरंकारी मिशन का सत्य-संदेश दिया।

बिना (म. प्र.)

जयपुर

कोलकाता

इलाहाबाद

रामपुर (उ. प्र.)

चंडीगढ़

देहरादून

सूरत

पटियाला

कविता : अशोक जैन

हम अटूट हैं, अविनाशी हैं

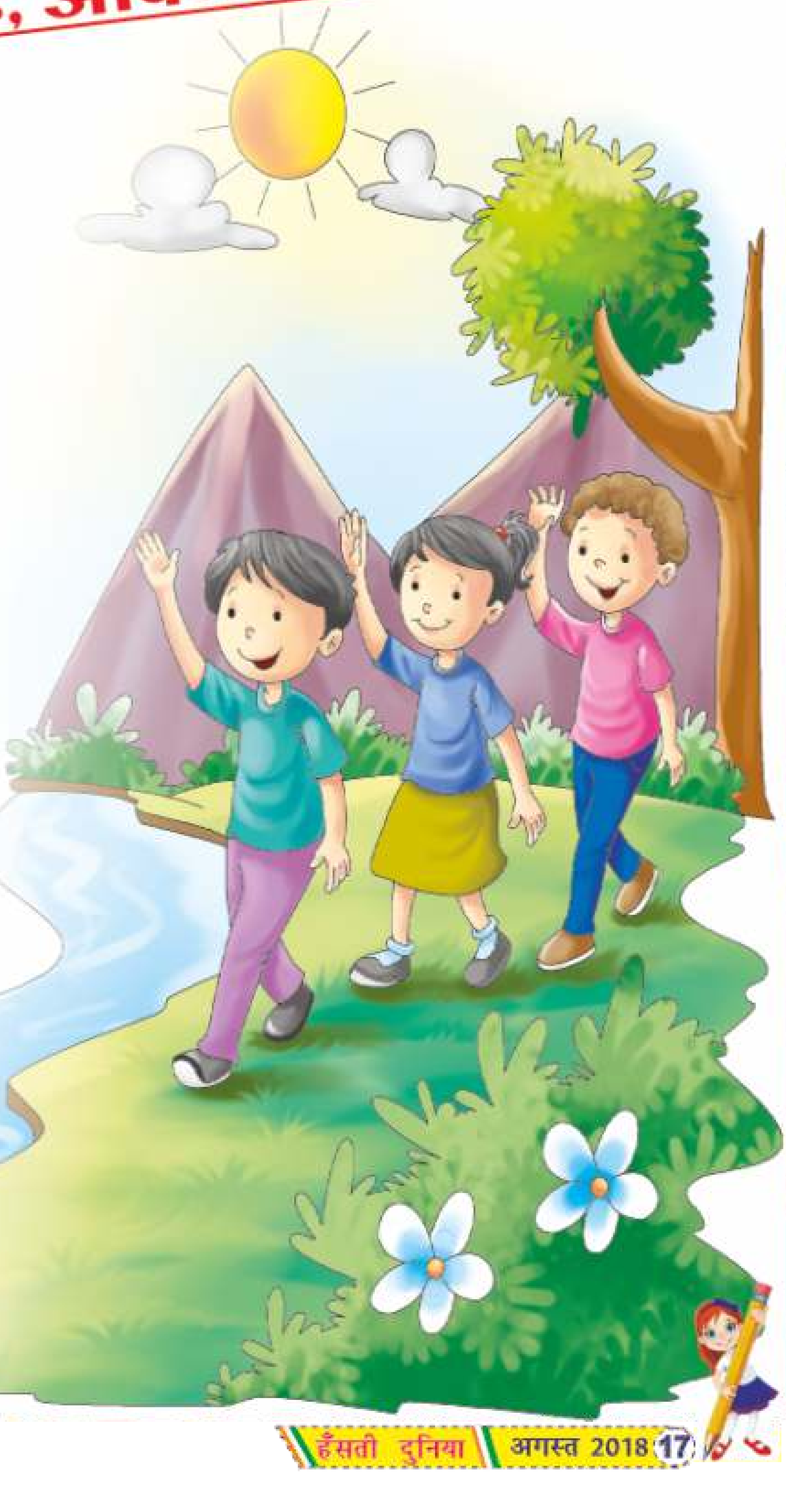

देश हमारा हमको प्यारा है,
इसकी गौरव कथा अमर है।

इसमें अलग-अलग भाषाएं,
जैसे नदियों की धाराएं।
लेकिन सागर एक हृदय का,
सबकी हुई एक आशाएं।

चाहे किरणें अलग-अलग हैं,
किंतु एक सबका दिनकर है।

अलग-अलग हैं प्रांत हमारे,
किंतु सभी भारतवासी हैं।
फूट नहीं पड़ सकती हममें,
हम अटूट दृढ़ विश्वासी हैं।

चाहे तारे अलग-अलग हैं,
किंतु एक सबका अम्बर है।

अलग-अलग हैं रूप हमारे,
बहुरंगी रुचियां रहती हैं।
लेकिन सब खुशबुएं हमारी,
एक हवा में ही बहती हैं।

चाहे फूल उगे या कांटे,
किंतु एक उपवन का घर है।

प्रेरक लेख : रूपा रानी

अस्सी वर्षीय वीर योद्धा कुंवर सिंह

एक वीर योद्धा थे। उनका नाम बाबू कुंवर सिंह था। जिस प्रकार रानी लक्ष्मीबाई ने आजादी के लिए हँसते-हँसते प्राणाहुति दी। उसी तरह बाबू कुंवर सिंह ने भी गुलामी की जंजीर काट फैंकने के लिए बलिदान दिया। वे हमारी आजादी की लड़ाई की पृष्ठभूमि हैं।

उस महान योद्धा का विजय दिवस 23 अप्रैल को मनाया जाता है व उन्हें नमन किया जाता है।

साहबजादा सिंह इनके पिता थे। साहबजादा सिंह के चार पुत्र थे। पहले पुत्र का नाम बाबू कुंवर सिंह दूसरे का दयाल सिंह, तीसरे राजपति सिंह तथा चौथा पुत्र अमर सिंह था।

उन चारों भाईयों में से बाबू कुंवर सिंह बहुत ही होनहार वीर और परिश्रमी व अपने इरादों के पक्के थे।

अंग्रेज सरकार की औपनिवेशिक नीतियों के कारण 1857 ई. में उनके विरुद्ध विद्रोह की चिंगारी भड़क उठी। देखते-देखते इस विद्रोह में एक-एक कर छोटे-बड़े राजे-महाराजे शामिल होने लगे। चारों ओर देश में क्रांति का माहौल छा गया। अंग्रेजों के प्रति यहाँ के निवासियों में घृणा उत्पन्न हो गयी और ये घृणा ही विद्रोह का कारण बनी।

उस समय देश छोटी-छोटी रियासतों में बंटा हुआ था और रियासतों के छोटे-छोटे रजवाड़े भी गुलामी से मुक्ति की लड़ाई में कूद पड़े। विद्रोह दिल्ली, बरेली, कानपुर, लखनऊ होते हुए आरा में पहुँचा।

आरा के पास जगदीशपुर में कुंवर सिंह जमींदार थे। यद्यपि ये 80 वर्ष के हो चले थे। इन्होंने अपने साथियों से कहा– वीरों अभी भारत माँ को हमारी जरूरत है जब माँ ही पराधीन रहे तब बेटा सुखी कैसे रह सकता है। अत: वीरों स्वतंत्रता संग्राम की इस बेला में हम भी जान की परवाह किये बगैर कूद पड़ें।

अंग्रेजों से वे भी असन्तुष्ट थे और गुलामी के कारण इनका मस्तिष्क अंग्रेजों के प्रति घृणा से भरा हुआ था। वे अपने हजारों साथियों के साथ अंग्रेजों की बैरकों पर टूट पड़े। बिहार में चारों ओर अपने साथियों के साथ अंग्रेजों पर इन्होंने तबाही मचा दी। इन्हें वीरता से लड़ते देख युवा भी आगे आये और वे भी अंग्रेजों से मुकाबला करने लगे।

अंग्रेजों को बिहार में चारों ओर खदेड़कर ये उत्तरप्रदेश की ओर निकल पड़े। बीच में आजमगढ़ में अंग्रेजों और कुंवर जी के बीच जमकर भयंकर युद्ध हुआ। अंग्रेज सैनिकों को इन्होंने गाजर-मूली की तरह काट डाला। अंग्रेज गवर्नर कुंवर बाबू से बहुत कुपित हो गया और किसी भी हालत में कुंवर बाबू को मारने का आदेश दिया। अंग्रेजों ने छिप-छिपकर इन पर नजर रखना शुरू किया।

उनके अनेक साथी मारे जा चुके थे। एक बार अंग्रेज छिपकर इनका पीछा कर रहे थे। इस बात का इन्हें पता नहीं था। ये निश्चिन्त होकर नाव से गंगा पार कर रहे थे। तभी अंग्रेज सैनिक आ गये और कुंवर सिंह पर गोली चलाने लगे। गोली इनकी बांह में लग गई थी। इन्होंने अपनी जख्मी बांह को तलवार से काटकर गंगा में डाल दिया। उस समय तो वे वहाँ से बच निकले। लेकिन गोली के जहर

प्रेरक-प्रसंग : जयेन्द्र

स्वराज्य महामंत्र के नायक ....

'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।' लोकमान्य तिलक ने ही यह महामंत्र देश को दिया और वे स्वराज्य के लिए आजीवन चेष्टा करते रहे। एक बार उनसे किसी मित्र ने पूछा– स्वराज्य प्राप्त होने के बाद आप कौन-सा काम लेंगे, प्रधानमंत्री का या मंत्री का?

लोकमान्य तिलक ने सहज सादगी के साथ कहा– भाई मेरा काम स्वराज्य प्राप्त हो जाने के बाद समाप्त हो जायेगा तब किसी कॉलेज में अध्यापक हो जाऊँगा और कुछ पुस्तकें लिखूंगा। हाँ, अभी तक मेरा ऐसा ही इरादा है।

तिलक को यूं पुस्तकों से भी बड़ा प्रेम था। पुस्तक सम्बन्धी यह घटना उनके विवाह के समय की है। शादी की रस्म के उपरान्त उनके ससुरजी ने उनसे पूछा– दामादजी! दहेज में क्या लेना पसन्द करोगे? घड़ी, कीमती वस्त्र, चाँदी के बर्तन, मोतियों की माला, साइकिल या चन्दन का सन्दूक?

इस पर तिलक ने मुस्कुराते हुए कहा– मुझे इन महंगी वस्तुओं में से किसी की भी आवश्यकता नहीं है, मैं घड़ी, कीमती वस्त्र, चाँदी के बर्तन, मोतियों की माला या साइकिल आदि कुछ नहीं चाहता। हाँ, अगर आप दहेज की रस्म के मुताबिक कुछ देना ही चाहते हैं तो मुझे शिक्षाप्रद, लाभकारी और उपयोगी ऐसी पुस्तकें दें जो मेरे अध्यापन तथा जीवन में सहायक हों, जिनके माध्यम से मैं समाज और देश को अच्छी तरह समझ सकूं और ऐसा ही उज्ज्वल ज्ञान अपने शिष्यों, परिवार के सदस्यों और समाज को दे सकूं।

अपने दामाद के मुख से ऐसी बात सुनकर ससुरजी गद्‌गद् हो उठे। उनकी आँखों में हर्ष के आँसू उमड़ आये और उन्होंने अपने दामादजी को एक दर्जन शिक्षाप्रद पुस्तकें भेंट में दीं। पुस्तकें पाकर तिलक बड़े प्रसन्न हुए और इन पुस्तकों की बदौलत ही वे देश और समाज की सेवा में तन-मन से जुट गये।

भारतीय इतिहास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का पुस्तक प्रेम हमें जीने की एक नई राह दिखाता है।

से ये मुक्त नहीं हो सके और जगदीशपुर में आकर 26 अप्रैल 1858 को दम तोड़ दिया।

बाबू कुंवर सिंह ने तो अपने उम्र तक का तकाजा न किया अर्थात अस्सी वर्ष की अवस्था में भी वे अंग्रेजों से लड़ते रहें और वीरगति को प्राप्त हुए।

ये भारत को आजाद तो नहीं करा सके परन्तु 80 वर्ष की उम्र में जो बहादुरी इन्होंने दिखायी उसको इतिहास नहीं भूला सकेगा। आने वाली पीढ़ी के लिए ये बहादुरी की प्रेरणा-स्रोत बन गये।

बाबू कुंवर सिंह के पास कोई बड़ी प्रशिक्षित सेना नहीं थी। किन्तु उनके नेतृत्व में संचालित युद्ध के सैनिकों में देशप्रेम, प्राणाहुति देने की उमंग व उत्कट उत्साह था। उनका यह उत्साह और उमंग एक दिन कायम हो गया और आज हमारी भारतमाता गुलामी रूपी जंजीरों से मुक्त व स्वतंत्र हो गई।

भारतमाता अपने इस सपूत को कभी नहीं भूला पायेगी।

कहानी : कृष्णकुमार मिश्र 'अचूक'

रिश्ते प्यार के

रक्षाबंधन का दिन था। सभी बहनें अपने-अपने भाइयों की कलाई पर तरह-तरह की राखियां बांध रही थीं। परन्तु निखिल आज सुबह से ही अपने कमरे से बाहर नहीं निकला था। वास्तव में उसकी एक बहन थी सरला। वह एक दुर्घटना का शिकार हो गई थी। पिछले साल सरला ने निखिल की कलाई में उसकी मनपसन्द की राखी बांधी थी। वही सब याद कर वह कमरे से बाहर नहीं निकला था। माँ लक्ष्मी तथा पापा प्रकाश ने कई बार पुकारा परन्तु वह सोने का बहाना बना बाहर नहीं निकला।

निखिल के एक मौसा थे। वह उसी मोहल्ले में रहते थे। दो साल पहले एक दुर्घटना में वह स्वर्ग सिधार गये थे। अब उनके यहाँ निखिल की मौसी कामिनी तथा उनकी लड़की शीला ही बची थी। प्रकाश की समाज में अच्छी प्रतिष्ठा थी। उनका कामिनी और शीला से विशेष लगाव नहीं था। वह तो लक्ष्मी अपनी बहन कामिनी की यदा-कदा थोड़ी बहुत सहायता कर दिया करती थी। यद्यपि यह बात निखिल को पता थी। इधर सरला के चले जाने के बाद निखिल बहुत उदास रहने लगा था। वह तो उसकी मौसी की लड़की शीला थी जिसने काफी हद तक अपना प्यार देकर उसकी उदासी कम कर दी और उसके दिल में बहन का स्थान बना लिया था। अब निखिल भी शीला को अपनी सगी बहन जैसा मानने लगा था।

आज रक्षाबंधन का दिन था। शीला निखिल को राखी बांधने का पूरा इन्तजाम किये अपने घर में बैठी थी। उसकी मम्मी कामिनी ने यह कहकर उसे रोक रखा था कि जब कोई बुलाने आये तब जाना वैसे जाने में क्या पता वे लोग बुरा मान जायें। प्रकाश की बहन कमला आई थीं। उन्होंने प्रकाश के हाथ में राखी बांधी और मिठाई खिलाई। प्रकाश ने निखिल को आवाज दी- बेटा, अपनी बुआ से राखी बंधवा लो।

-नहीं पापा, मैं भी अपनी बहन से ही राखी बंधवाऊँगा।-

यह सुन प्रकाश को सरला की याद आ गई और वह भरे गले से बोले- बेटा, तेरी बहन ...

बीच में ही निखिल बोल पड़ा- पापा है और वह है शीला दीदी।

-नहीं-नहीं वह हमारी बराबरी की कहाँ? वह तो बहुत गरीब हैं।

प्रेरक-प्रसंग : राजकुमार जैन

साहसी किशोर

आजादी से पहले की बात है यह। उन दिनों आजादी का आन्दोलन जोरों पर था। देश का बच्चा-बच्चा आजादी की खातिर मर-मिटने को तत्पर था। हरेक शहर में और हरेक गाँव में लोग ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपना खुला विरोध जाहिर कर रहे थे। ब्रिटिश सरकार आजादी के इस आन्दोलन को पूरी कड़ाई से दबा रही थी। उन्हीं दिनों वाराणसी में कुछ क्रान्तिकारियों ने जुलूस निकाला। जुलूस अभी नगर के प्रमुख चौराहे तक भी नहीं पहुँच पाया था कि बड़ी तादाद में पुलिस आ धमकी और आनन-फानन में सभी क्रान्तिकारियों को हिरासत में ले लिया गया।

गिरफ्तार किये गए क्रान्तिकारियों में एक चौदह वर्षीय किशोर भी था। जब अंग्रेज जिलाधीश के सामने इस किशोर को कटघरे में लाया गया तो जिलाधीश इस किशोर को देखकर हैरत में पड़ गया। उसने तेज स्वर में पूछा– तुम्हारा नाम?

आजाद।– किशोर ने निर्भीकता से जवाब दिया।

जिलाधीश का दूसरा प्रश्न था– निवास स्थान?

जेलखाना।– दृढ़ स्वर में उस किशोर का जवाब था।

किशोर का यह अटपटा जवाब सुनकर जिलाधीश झल्ला-सा गया। लेकिन फिर कुछ सोचकर उसने उसे समझाने के लिहाज से कहा– देखो तुम अभी बच्चे हो। शायद गलत लोगों के बहकावे में आकर इस खतरनाक आन्दोलन से तुम जुड़ गए हो। यदि तुम माफी मांग लो तो मैं तुम्हें रिहा कर सकता हूँ।

यह सुनकर किशोर का चेहरा लाल हो गया। उसने तपाक से कहा– अपराधी मैं नहीं तुम हो क्योंकि तुम विदेशी होकर भी मेरे देश पर कब्जा किये बैठे हो। माफी तो तुम्हें मांगनी चाहिए।

जिलाधीश गुस्से में आगबबूला होकर उसे कारावास की सजा सुना दी। लेकिन किशोर के चेहरे पर अफसोस की शिकन तक न थी। आप जानते हैं यह किशोर कौन था? यह साहसी किशोर था– चन्द्रशेखर आजाद। जिन्हें आज भी हम आदर के साथ याद करते हैं। ●

–तो क्या पापा रिश्ते भी अमीर-गरीब हुआ करते हैं! मैं शीला दीदी से ही राखी बंधवाऊँगा। वह मुझे सरला दीदी जैसा प्यार देती है।

–ठीक ही तो कह रहा है निखिल। आपने देखा नहीं सरला के जाने पर उसकी क्या हालत हो गई थी? वह तो भला हो शीला का जो उसने अपना प्यार बांटकर निखिल को बहन का प्यार दिया। रिश्ते प्यार से होते हैं। अमीरी-गरीबी से नहीं।– निखिल की मम्मी ने कहा।

लक्ष्मी की बातें सुन प्रकाश की भी समझ में आ गया था कि वास्तव में रिश्ते प्यार के होते हैं। फिर उन्होंने तुरन्त घर का काम करने वाली को भेजकर शीला और कामिनी को बुलवाया। शील ने आकर निखिल के राखी बांधी और मिठाई खिलाई। निखिल ने भी उपहार दे पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया। सभी खुश थे। इस तरह निखिल ने प्यार की मिट्टी डाल रिश्तों के बीच अमीरी-गरीबी की खाई को पाट दिया था। ●

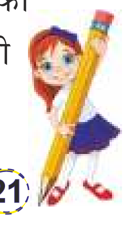

ऐतिहासिक कहानी : लाल सिंह

बहादुर महारानी

उरई के महाराज माहिल की तीन बहनें थीं। एक दिन उसने तीनों को बुलाकर उनसे पूछा– तुम किसका दिया खाती हो?

दो ने जवाब दिया– महाराज! हमारा जीवन तो आपके सहारे चल रहा है। आप जो भी हमें देते हो वही हम खाती हैं। आप हमारे पालनहार हैं।

छोटी बहन मलना शान्त खड़ी रही। उसे चुप देखकर महाराज माहिल ने उससे अपना प्रश्न फिर दोहराया– मलना बताओ! तुम किसका दिया खाती हो?

मलना ने जवाब दिया– महाराज! पूरे संसार का पालनकर्ता तो एक ही है। वह तुम्हें भी देता है और मुझे भी देता है। उसे परमात्मा कहते हैं। वह सर्वशक्तिमान है।

राजा माहिल मलना के उत्तर को सुनकर क्रोधित हो उठा और उसने अपनी बहन से कहा– मैं तुम्हारे इस सर्वशक्तिमान परमात्मा की परीक्षा लूंगा और मैं देखूंगा कि उसके अन्दर कितनी शक्ति है।

परमात्मा की शक्ति को परखने के लिए उसने अपनी सबसे बड़ी बहन का विवाह इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) के सम्राट पृथ्वीराज के साथ किया और मझली बहन का हाथ कन्नौज के राजा जयचन्द के हाथ में दिया।

मलना के लिए उन्होंने वर खोजने के लिए कुछ लोगों से कहा और उन्हें आदेश दिया कि जो व्यक्ति दीन-हीन और निर्धन हो, ऐसा व्यक्ति खोजकर मुझे सूचना दो। मलना के लिए वर खोजते-खोजते वे (आज जिस जगह पर महोबा शहर है) एक स्थान पर आये और उन्होंने देखा कि एक दीनहीन आदमी है। उसके हाथ-पैर सूखकर लकड़ी के समान हो गये हैं और उसका पेट बढ़ा हुआ है, उसका रंग भी काला है; जो देखने में बहुत ही भद्दा है।

उन्हें लगा कि महाराज माहिल शायद ऐसे ही आदमी से बहन का विवाह करना पसन्द करेंगे और हमें पुरस्कार देंगे। वे उसे उरई में महाराज माहिल के पास ले गये। छोटी बहन मलना के लिए ऐसे पति की तलाश करने पर महाराज माहिल अपनी सफलता पर बहुत ही प्रसन्न हुए।

मलना को महाराज माहिल ने बुलवाया और उसे आदेश दिया कि वह उसके साथ शादी करे और परमात्मा के सर्वशक्तिमान होने का परिचय दे।

मलना ने बिना किसी संकोच के परमात्मा पर विश्वास करते हुए बीमार और बदरूप आदमी से विवाह करना स्वीकार कर लिया।

मलना का यह साहस देखकर राजा माहिल आगबबूला हो उठा और मलना को दहेज के नाम पर फूटी कौड़ी भी नहीं दी। मलना खाली हाथ उरई से अपने पति के साथ महोबा गाँव की ओर चल पड़ी।

मलना के पति परिमाल को इस बात पर बहुत ही दु:ख था कि उसके कारण एक राजकुमारी का जीवन तबाह हो गया है। वह पश्चाताप के आंसू बहाता हुआ मलना के साथ अपने गाँव की ओर बढ़ता चला जा रहा था।

गाँव की सीमा के पास पहुँचकर मलना के दुर्भाग्य पर परिमाल फूट-फूटकर रोने लगा लेकिन मलना ने परिमाल को ढाढ़स बंधाया और परमात्मा की शक्ति पर विश्वास रखने की प्रेरणा परिमाल को दी।

महोबा गाँव उस समय आठ-दस झोपड़ियों का ही गाँव था। एक झोंपड़ी के आगे जाकर परिमाल

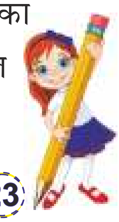

ने कहा– यही तुम्हारे पति का घर है। मलना ने उसमें नि:संकोच प्रवेश किया और पति की सेवा करते हुए वह उसमें रहने लगी।

एक शाम मलना बहुत उदास थी। उसकी उदासी का कारण था उसका व्रत रखना। भाई के घर जब वह थी; तब तो वह अपने व्रत की पूर्णता पर बच्चों को खाना खिलाती थी, उन्हें यथायोग्य धन, वस्त्रादि देती थी। इसी उधेड़बुन में रात्रि के तीन पहर कब बीत गये उसे पता ही नहीं चला। उसे नींद का हल्का-सा झोंका आया तो उसे लगा कि जैसे झोंपड़ी के पीछे कुछ खुसर-पुसर हो रही है। धीमी-धीमी आवाजें सुनाई देनी प्रारम्भ हुई।

एक व्यक्ति दूसरे से कह रहा था कि यह जो परिमाल ठाकुर है यदि एक कौआ मारकर उसे तेल में पकाया जाये और उस तेल से परिमाल की मालिश की जाये तो यह ठीक हो जायेगा।

दूसरा व्यक्ति बोला– यह जो सामने साँप की बांबी (साँप का बिल) है यदि इसको खोदा जाये तो अपार सम्पत्ति प्राप्त होगी। पुरखे बताते थे कि यहाँ पर खज़ाना गड़ा हुआ है और साँप उसकी रक्षा करता है।

मलना ने झोंपड़ी से बाहर निकल कर देखा वहाँ कोई नहीं था। उसे लगा कि यह शायद उसके अत:करण की आवाज थी।

सुबह को मलना ने चिड़ीमारों को बुलाकर एक कौवे को पकड़वा लिया। उसे तेल में पकाकर, उस तेल से अपने पति परिमाल की मालिश की। ऐसा करने का आश्यचर्यजनक प्रभाव हुआ और परिमाल कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो गया।

पहले व्यक्ति की बात को आजमा लेने के पश्चात् मलना ने दूसरे व्यक्ति की बात अपने पति को बतायी।

परिमाल ने कहा कि इस बांबी में तो नाग रहता है जो बहुत जहरीला है। यह तो बड़ा कठिन काम है।

मलना बोली– बड़े काम में सफलता के लिए प्रयत्न भी बड़े ही करने पड़ते हैं। घबराओ नहीं इस बांबी में गरम तेल डलवाओ। साँप या तो मर जायेगा या बांबी को छोड़कर भाग जायेगा; परन्तु हमारे पास दूसरे आदमी की बात पर अविश्वास करने का कोई भी कारण नहीं है। अत: एक बार प्रयत्न अवश्य कर लेना चाहिये।

परिमाल ने तेल गरम किया और बांबी में भरा। साँप उसमें से मरणासन्न-सा बाहर निकल आया।

परिमाल ने उसे आसानी से मार डाला। अब उन्होंने धीरे-धीरे बांबी की खुदाई करनी प्रारम्भ की कुछ गहरा खोदने पर उन्हें वहाँ से अपार स्वर्ण एवं हीरे-माणिक्य आदि मिलने प्रारम्भ हो गये।

प्राप्त धन से मलना ने एक किला बनवाया। सेना एकत्र की। उसका सेनापति उसने जसराज और बच्छराज (जो दोनों भाई थे) को बनाया।

जसराज-बच्छराज ने लड़ाई के मैदान में राजा माहिल को हराकर उसके पचास गाँवों पर कब्जा कर लिया और माहिल और उसके पुत्र को बन्दी बनाकर रानी मलना के सामने उपस्थित किया।

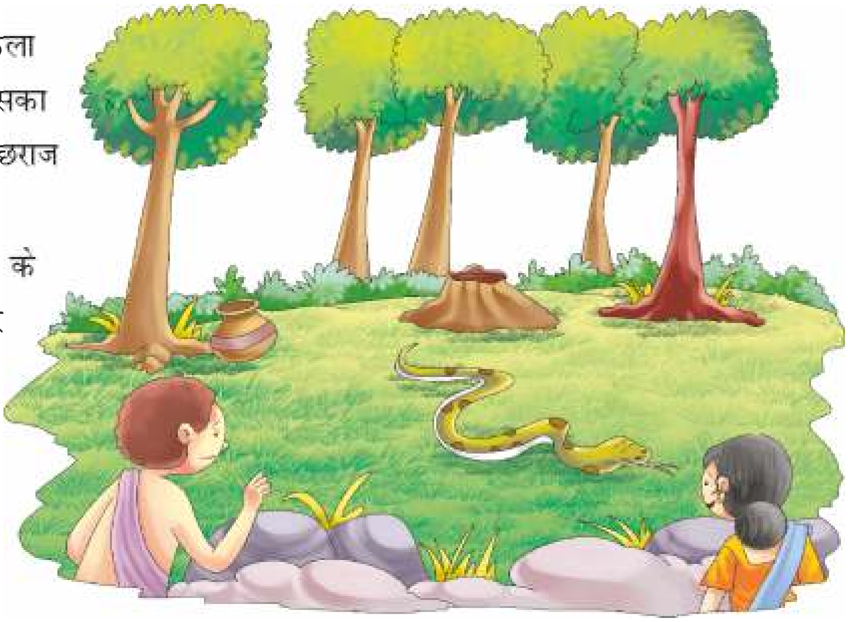

मलना ने माहिल से पूछा— महाराज माहिल अब बताओ, मैं किसका दिया खाती हूँ? तुमने परमात्मा की शक्ति को देख लिया या नहीं?

सभी स्तब्ध थे। माहिल महाराज गुमसुम बन्दी बने खड़े रहे। कुछ देर पश्चात् रानी मलना ने माहिल को मुक्त करने का आदेश जारी किया और उनके पचास गाँव भी उन्हें वापस लौटा दिये। रानी ने उसे अपने पति के सामने भी प्रस्तुत किया। राजा उस सुन्दर नौजवान को देखकर भी हैरान हो गया।

उतार-चढ़ाव प्रत्येक मनुष्य के जीवन में स्वाभाविक प्रक्रिया है। यही क्रम महारानी मलना के साथ भी बना। जसराज और बच्छराज की एक लड़ाई में मौत हो गयी। इन दोनों के मारे जाने के बाद मलना प्रायः असहाय अवस्था में आ गयी। उन्होंने बड़े धैर्य से जसराज व बच्छराज के पुत्र आल्हा और ऊदल का लालन-पालन किया। उन्हें विरोचित शिक्षा दिलाई। आल्हा और ऊदल अपने पिता से भी बढ़कर वीर पुरुष हुए। मलना ने उन्हें अपनी सेना का मुख्य नायक नियुक्त किया। आल्हा और ऊदल के भीतर स्वामी-भक्ति, राज्य-भक्ति के भाव कूट-कूटकर भरे थे। जिनका परिचय उनके द्वारा किये गये कार्यों से मिलता है।

आल्हा और ऊदल ने बड़ी बहादुरी से महोबा राज्य के सेनापतित्व के भार को संभाला और आस-पास के 52 राजाओं को हराकर महोबा राज्य की सत्ता को फिर से कायम किया। यही नहीं महारानी मलना के आदेश से दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान पर आक्रमण किया और उसे भी युद्ध के मैदान में हराकर महारानी मलना के पुत्र ब्रह्मा का विवाह पृथ्वीराज चौहान की पुत्री बेला के साथ कराया।

आज भी उत्तर भारत के ग्रामों में आल्हा और ऊदल के किस्से, उनके द्वारा लड़ी गयी लड़ाइयों के वर्णन बड़े ही शौक से सुनाये और गाये जाते हैं। जिन्हें सुनकर श्रोताओं में वीररस साकार हो उठता है।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

प्यारा भारत

आँखों का तारा भारत,
हम सबका प्यारा भारत।

सारी दुनिया से सुन्दर,
अपना ये सारा भारत।

देकर ज्ञान दसों दिशा में,
बना गुरु हमारा भारत।

पूरब से उगता सूरज,
होता उजियारा भारत।

गंगा की पावन धारा,
सजवाती न्यारा भारत।

तुलसी के घर आंगन में,
पुजता दुलारा भारत।

बाल कविता : अंकुश्री

पूज्य भूमि भारत

देश हमारा जवानों का,
वीरों का मस्तानों का।
काम नहीं बेईमानों का,
वतन मेरा इन्सानों का।।

वीरों ने है ठाना,
दुश्मन को ललकार रहा।
करने को शत्रुदमन,
देश यह तैयार रहा।।

विशेष लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

सिक्किम का राजकीय पशु

लाल पाण्डा

पाण्डा प्रोसायोनिडाइ परिवार का स्तनपायी जीव है। यह एशिया के अत्यन्त सीमित क्षेत्र में ही देखने को मिलता है। पाण्डा पूर्वी हिमालय में नेपाल से लेकर हिमाचल प्रदेश के समशीतोष्ण वनों तक, दक्षिण-पश्चिमी चीन के सछ्वान प्रान्त के बांस के जंगलों में एवं तिब्बत, सिक्किम और बर्मा के कुछ भागों में पाया जाता है। पाण्डा अपना निवास बर्फ से ढँके अत्यन्त दुर्लभ स्थानों में बनाता है, अतः इसके सम्बन्ध में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। यह एक अद्‌भुत प्राणी है। इसकी कुछ विशेषताएं भालू से मिलती हैं और कुछ रैकून से। उदाहरण के लिए इसका रक्त सीरम भालू के समान होता है, किन्तु गुणसूत्र रैकून की तरह होते हैं। यह अपने पिछले पैरों के पूरे तलवे जमीन पर रखकर भालू की तरह चलता है और भालू की तरह गुर्राने की आवाज निकालता है, किन्तु रैकून और बिल्ली की तरह फूत्कार भी करता है। पाण्डा की इन्हीं विशेषताओं के कारण एक लम्बे समय तक जीव वैज्ञानिक यह निश्चित नहीं कर सके कि इसे भालू परिवार का माना जाये या रैकून परिवार का।

जीव वैज्ञानिकों के अनुसार हमारी धरती पर लगभग 4 करोड़ वर्ष पूर्व 'मियासिस' नामक एक मांसाहारी जीव पाया जाता था, जो देखने में कुत्ते के समान था। आगे चलकर इसकी दो प्रजातियां विकसित हुईं। पहली प्रजाति का जीव भालू से मिलता-जुलता था और दूसरी प्रजाति का जीव जंगली कुत्ते से। दूसरी प्रजाति से ही वर्तमान जंगली कुत्ता, लोमड़ी, भेड़िया, लकड़बग्घा आदि विकसित हुए। पहली प्रजाति के भालू जैसे जीव से लगभग दो करोड़ वर्ष पूर्व प्राचीन रैकून की उत्पत्ति हुई थी। वर्तमान रैकून और पाण्डा इसी के वंशज हैं।

पाण्डा की दो जातियां पायी जाती हैं— भीमकाय पाण्डा और लाल पाण्डा। दोनों के आकार और आदतों में बहुत अन्तर होता है। भीमकाय पाण्डा की शारीरिक संरचना और बहुत से गुण भालू के समान होते हैं, जबकि लाल पाण्डा रैकून की तरह होता है।

भीमकाय पाण्डा चीन का राष्ट्रीय पशु है। यह विश्व में केवल चीन में ही पाया जाता है तथा चीन में भी केवल सछ्वान प्रान्त के बर्फीले पहाड़ों पर 2300 मीटर से लेकर 4000 मीटर तक की ऊँचाई वाले भागों में मात्र 800 किलोमीटर के क्षेत्र में मिलता है। भीमकाय पाण्डा बांस वाले जंगलों अथवा सदाबहार झाड़ियों वाले ऐसे वनों में निवास करता है, जो पूरे वर्ष बर्फ अथवा कोहरे से ढँके रहते हैं। दुर्गम निवास और सीमित क्षेत्र के कारण एक लम्बे समय तक भीमकाय पाण्डा के विषय में जीव-वैज्ञानिकों को कोई विशेष जानकारी नहीं मिल सकी थी।

भीमकाय पाण्डा दूर से एक विलक्षण भालू के समान दिखाई देता है। इसकी लम्बाई 120 सेंटीमीटर से 150 सेंटीमीटर तक एवं वजन 75 किलोग्राम से 160 किलोग्राम तक होता है। इसके शरीर पर सफेद अथवा पीलापन लिये हुए ऊनी समूर होता है। भीमकाय पाण्डा के कान, आंखों के बाहर के चारों ओर का गोलाकार भाग, थूथुन के आगे का भाग एवं इसके कूल्हे और पीछे का काफी भाग काला होता है। इसके अगले और पिछले पैरों में 5-5 उंगलियां होती हैं, जिनमें तेज नाखून होते हैं। इसके नाखूनों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि ये पूरी तरह भीतर की ओर नहीं मुड़ पाते हैं। भीमकाय पाण्डा के अगले पैरों में एक अतिरिक्त हड्डी होती है, जिसका विकास छठी अंगुली के रूप में हो गया है। इसका उपयोग यह वृक्षों की शाखाओं अथवा भोजन को पकड़ने के लिए करता है। इस प्रकार की छठी अंगुली पाण्डा के अतिरिक्त किसी अन्य जीव में देखने को नहीं मिलती।

भीमकाय पाण्डा का प्रमुख भोजन बांस है। पाण्डा के दांतों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसके पर्वूज मांसाहारी थे, किन्तु अब इसके दांतों की संरचना में काफी परिवर्तन हो गया है और ये इस प्रकार के हो गये हैं कि यह विभिन्न प्रकार के कन्दमूल, वनस्पति तथा बांस की पत्तियां आदि चूसकर सरलता से खा सकता है।

भीमकाय पाण्डा का गर्भकाल 120 दिन से लेकर 140 दिन तक होता है। गर्भकाल पूरा होने पर मादा भीमकाय पाण्डा प्राय: चट्टानों की दरारों में एक बच्चे को जन्म देती है। इसका नवजात बच्चा अंधा और असहाय होता है। इसकी यह स्थिति लगभग एक माह तक रहती है। इस मध्य मादा इसे अपने मुंह में दबाकर किसी सुरक्षित स्थान तक पहुँचाती है तथा इसकी देखभाल करती है। 8-10 माह का बच्चा आत्मनिर्भर हो जाता है औ स्वतंत्र रूप से विचरण करने लगता है। भीमकाय पाण्डा यदि अपने शत्रुओं से बचा रहे तो लगभग 25-30 वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

लाल पाण्डा बहुत छोटा होता है। इसकी लम्बाई 60 सेंटीमीटर से लेकर 110 सेंटीमीटर तक होती है। इसमें लगभग आधी लम्बाई पूंछ की होती है। लाल पाण्डा अधिक भारी नहीं होता। इसका वजन 3 से 5 किलोग्राम के मध्य होता है। लाल पाण्डा के शरीर पर चमकदार हल्का पीलापन लिये हुए लाल रंग का घना, कोमल समूर होता है। इसकी पूंछ लम्बी, मोटी और रोयेंदार होती है एवं इस पर काले व पीले रंग के छल्ले होते हैं। इसकी पूंछ का अन्तिम भाग निश्चित रूप से काला होता है। लाल पाण्डा का मुंह सफेद होता है और दोनों आंखों के नीचे समूर के रंग की एक पट्टी होती है, जो नीचे जाकर गले से मिल जाती है। इसके कान नुकीले होते हैं और आंखों और मुंह के चारों ओर सफेद रंग का घेरा होता है। लाल पाण्डा के सिर और शरीर के नीचे का भाग काला होता है। इसके अगले और पिछले पैर भालू की तरह छोटे होते हैं और पंजों में तेज व नुकीले नाखूनों वाली 5-5 उंगलियां होती हैं। इसके नाखून पूरी तरह मुड़ नहीं पाते। लाल पाण्डा के चारों पैर बालदार समूर से ढंके होते हैं तथा इसके अगले पैरों की बनावट इस प्रकार की होती है कि इनकी सहायता से यह बर्फीली चट्टानों को सरलता से पकड़ सकता है और वृक्षों पर तेजी से चढ़ सकता है।

लाल पाण्डा निशाचर है। अर्थात् यह सूर्यास्त के बाद भोजन की तलाश में निकलता है। यह दिन के समय वृक्षों के कोटरों अथवा शाखाओं पर आराम करता है।

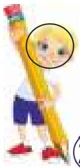

नौवीं कक्षा के छात्र ने बनाये दो 'ऐप'

विश्व के सबसे बड़े सर्च इंजन गूगल ने पटना के नौवीं कक्षा के छात्र आर्यनराज द्वारा बनाये दो ऐप 'कंप्यूटर शॉर्टकट कीज़' और 'व्हाट्सऐप क्लीनर लाइट' को खरीदा है। गूगल ने आर्यन को 'मेल' द्वारा दोनों ऐप खरीदे जाने की पुष्टि की है। आर्यन को इसके लिए दो लाख रुपये दिए गए हैं। हालांकि आर्यन ने इस राशि को गरीबों में बांट दिये जाने को कहा है। इतनी कम उम्र में दो 'ऐप' तैयार करने के लिए गूगल ने आर्यन की सराहना की है।

गूगल प्लेस्टोर पर मौजूद 'कंप्यूटर शॉर्टकट कीज़' और 'व्हाट्सऐप क्लीनर लाइट' को इंस्टॉल करने के बाद यूजर्स इसे बढ़िया रेटिंग दे रहे हैं। कंप्यूटर शॉर्टकट कीज़ को इस तरह डेवलप किया गया है कि वह यूजर फ्रेंडली हो। यह यूजर की जरूरत के हिसाब से बनाया गया है। कुछ ऐसे शॉर्टकट कीज़ हैं जिनके इस्तेमाल से कंप्यूटर पर तेज गति से काम करने में मदद मिलती है। कुछ एजुकेशनल एप्लीकेशन भी हैं जो छात्रों के लिए बेहद उपयोगी हैं।

वहीं व्हाट्सऐप क्लीनर लाइट ऐप को डाउनलोड कर लेने के बाद व्हाट्सऐप पर आने वाले वायरस और अन्य बेकार चीजें खुद ब खुद स्कैन हो जाती हैं। इस ऐप के जरिये आप अपने व्हाट्सऐप के बैकग्राउंड में तस्वीर लगा सकते हैं। (स्रोत : लाइवहिन्दुस्तान.कॉम)

लाल पाण्डा का प्रमुख भोजन बांस की कोपलें, मुलायम पत्तियां, कन्दमूल तथा सदाबहार रसीली झाड़ियां हैं। इनके साथ ही यह अण्डे तथा छोटे-छोटे स्तनपायी जीव भी खाता है। बांस इसका प्रिय भोजन है। यह दोनों हाथों से बांस की पत्तियां तथा कोपलें तोड़ता है और उन्हें चूसकर खाता है। यह कभी भी बांस के जंगलों से दूर नहीं जाता। लाल पाण्डा के दांतों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसके पूर्वज मांसाहारी थे, किन्तु अब इसके दांतों की सरंचना में काफी परिवर्तन हो गया है और ये इस प्रकार के हो गये हैं कि यह विभिन्न प्रकार के कन्दमूल, वनस्पति तथा बांस की पत्तियां आदि चूसकर सरलता से खा सकता है। पाण्डा के खाने का ढंग ऐसा होता है कि शीघ्र ही इसका पेट नहीं भर पाता, अतः इसे कम से कम 12 घंटे भोजन करना पड़ता है। यह गोधूलि के समय भोजन की तलाश में निकलता है और अगले दिन प्रातः वापस लौटता है। लाल पाण्डा वर्षभर सक्रिय रहता है। यह जमीन पर दौड़ते हुए कभी नहीं देखा गया, किन्तु वृक्षों पर इसकी तेजी देखने योग्य होती है। पाण्डा कुत्तों से बहुत डरता है। इसे जैसे ही अपने आसपास कुत्तों के होने का एहसास होता है, यह भागकर वृक्ष पर चढ़ जाता है। यह वृक्षों की पतली-पतली शाखाओं पर भी चढ़ जाता है और सरलता से फुनगी तक पहुँच सकता है। इसके बाद यह नीचे मुंह करके उतरता है।

लाल पाण्डा एशिया के एक अत्यन्त छोटे और सीमित क्षेत्र में पाया जाता है। वर्तमान में पाण्डा एक विलुप्तप्राय दुर्लभ वन्यजीव है। विश्व में इसकी संख्या 500 से भी कम बची है। इसे बचाने के लिए संरक्षण की आवश्यकता है। इस दिशा में भारत ही नहीं, विश्व स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। विश्व वन्यजीव संगठन जैसी संस्थाएं भी इस दिशा में कार्य कर रही हैं। ●

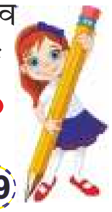

प्रेरक-प्रसंग : अनिता जैन

किसान के लिए जगह नहीं

बात उन दिनों की है जब मि. जैफरसन अमेरिका के उपराष्ट्रपति थे। जैफरसन को अपने उपराष्ट्रपति होने का तनिक भी गर्व नहीं था। एक बार वह एक अच्छे से होटल में पहुँचे। उन्होंने बहुत सादे और सस्ते से वस्त्र पहन रखे थे तथा उनके साथ कोई नौकर भी नहीं था।

होटल के काउंटर पर पहुँचकर जैफरसन ने एक कमरा मैनेजर से मांगा। मैनेजर ने जैफरसन के हुलिये पर ऊपर से नीचे तक नजर डाली और उन्हें कोई साधारण व्यक्ति समझकर टालने के इरादे से कह दिया– इस समय होटल का कमरा खाली नहीं है। आप जा सकते हैं।

जैफरसन ने अपने मुँह से एक शब्द भी नहीं कहा और सिर नीचा कर होटल से चुपचाप बाहर निकल गए।

संयोग से, जब वह होटल से बाहर निकल रहे थे, तभी एक धनाढ्य व्यक्ति होटल में घुसा। उसने जैफरसन और होटल मैनेजर के बीच होने वाला वार्तालाप सुन लिया था। वह फौरन मैनेजर के पास जाकर बोला– क्या तुम नहीं जानते कि जिस व्यक्ति को तुमने अभी-अभी कमरा खाली न होने और होटल से बाहर निकल जाने के लिए कहा है वह कौन है?

मैनेजर ने रुखाई से कहा– नहीं, मैं उसे नहीं जानता और न ही उस फटीचर आदमी के बारे में जानना चाहूंगा।

–वह व्यक्ति अमेरिका का उपराष्ट्रपति जैफरसन है।– धनाढ्य व्यक्ति बोला।

यह सुनकर मैनेजर के पैरों तले की जमीन खिसक गई। उसने फौरन नौकरों को साथ लिया और जैफरसन को ससम्मान से लिवा लाने को दौड़ पड़ा।

उन सबने जैफरसन के पास पहुँचकर उनसे क्षमा-याचना की और बताया कि हमने आपको एक साधारण सा किसान समझा था। लेकिन जैफरसन ने स्पष्ट शब्दों में लौटने से इन्कार करते हुए कहा– जिस होटल में एक साधारण किसान के वास्ते जगह नहीं है, वहाँ अमेरिका का उपराष्ट्रपति भला कैसे ठहर सकता है?

जैफरसन का जवाब सुनकर मैनेजर को अहसास हो गया कि आदमी बड़ा कपड़ों से नहीं योग्यता से होता है।

अंतरिक्ष और आकाश में क्या अन्तर है?

आकाश पूरे ब्रह्माण्ड का सूचक है, जिसमें हमारी पृथ्वी भी सम्मिलित है, जबकि अंतरिक्ष का अर्थ है पृथ्वी को छोड़कर शेष सभी स्थान हैं।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

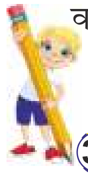

दो बाल कविताएं :

हरजीत निषाद

स्वतंत्राता दिवस प्यारा

पंद्रह अगस्त आया।
हँसी खुशी साथ लाया।
स्वतंत्रता दिवस प्यारा,
तिरंगा है लहराया।

मन में है भाव अच्छे।
सजे धजे हैं बच्चे।
देश भक्त कर्म निष्ठ,
साहसी संकल्प सच्चे।

भारत के सपूत हैं ये।
विश्व शांति दूत हैं ये।
देश द्रोहियों के लिए,
काल यमदूत हैं ये।

स्वार्थ से हैं दूर बच्चे।
प्रेम से भरपूर बच्चे।
शान हिन्दुस्तान की हैं,
योग्य वीर शूर बच्चे।

तिरंगा लहराएंगे

भागी परतंत्रता।
आई स्वतंत्रता।
देश के सपूतों ने,
दिखलाई वीरता।

वीरों की ललकार।
युवाओं की पुकार।
आगे बढ़कर करो,
राष्ट्र का श्रृंगार।

शौर्य हम जगाएंगे।
भारत को सजाएंगे।
इस महान देश की,
शान हम बढ़ाएंगे।

राष्ट्र गीत गाएंगे।
तिरंगा लहराएंगे।
पर्व है आजादी का,
गर्व से मनाएंगे।

बाल कथा : चित्रेश

सेठ की चतुराई

एक बार की बात, लक्ष्मी और दरिद्रा धरती पर सैर करने आईं। दोनों बहनें सुन्दर तो थीं ही। उस रोज उन्होंने चकाचौंध करने वाला श्रृंगार भी कर रखा था। बातचीत के बीच उनमें विवाद उठ खड़ा हुआ कि हममें कौन अधिक सुन्दर है? लक्ष्मी को अपने रूप पर घमण्ड था तो दरिद्रा अपने सौन्दर्य पर मुग्ध थी। कोई भी अपने को दूसरे से जरा भी कम मानने को तैयार न थीं।

इसी समय सामने से नगर सेठ आता दिख गया। दरिद्रा ने सुझाया– चलो, इसे पंच बनाकर फैसला करा लें।

लक्ष्मी सहमत हो गई। दोनों बहनें अविलम्ब नगर सेठ के पास पहुँच गईं और अपना परिचय देकर समस्या उसके सामने रख दी। सेठ ठहरा चालाक व्यक्ति! वह दोनों में से किसी को भी नाराज नहीं करना चाहता था। इसलिए चतुराई से काम लेते हुए वह बोला– देवियों, आप दोनों ही महान सुन्दरियां हैं। किसे अधिक कहूं; समझ में नहीं आ रहा। आप दोनों मेरे साथ कुछ दूर चलें। मैं आप दोनों की चाल-ढाल और बात-व्यवहार परख लूं, तभी सही निर्णय दे पाऊंगा।

दोनों बहनें उसके साथ चलने लगीं। वह उन्हें अपनी हवेली के पास ले आया। फिर दरिद्रा की तरफ आदरपर्वूक देखते हुए कहा– देवी, आप रूकें, मैं दोनों देवियों को अलग-अलग ढंग से समझने की कोशिश करता हूँ।

कहकर वह लक्ष्मी को हवेली के अन्दर ले गया और बड़े प्रेम से बोला– देवी, आप थोड़ी देर यहाँ विश्राम करें। मैं दरिद्रा देवी से मिलकर आता हूँ।

लक्ष्मी को भंडारगृह में बैठाकर नगर सेठ दरिद्रा के पास गया। बड़े विनीत भाव से बोला– रूप की देवी, आपकी सुन्दरता का मैं बयान नहीं कर सकता। आप जरा मुड़कर चलें तो सही।

दरिद्रा मुड़कर हवेली की विपरीत दिशा में चलने लगीं। नगर सेठ दरिद्रा के रूप और चाल की प्रशंसा करता रहा। दरिद्रा खुशी से फूली न समा रही थी। वे चलते-चलते काफी दूर निकल गईं तो उसने फैसला सुनाया– देवी, आप मेरी हवेली से दूर जाती इतनी सुन्दर लग रही हैं कि हजार लक्ष्मियां भी आपके मुकाबले में नहीं ठहर सकतीं। मैं तो कहता हूँ आप जैसी ब्रह्मांड सुन्दरी का लक्ष्मी के साथ टहलना शोभा नहीं देगा।

दरिद्रा को उसकी बात जंच गई। वह अकेले ही आगे बढ़ गई। लौटकर नगर सेठ भंडारगृह के अन्दर गया। यहाँ उसने बड़ी चालाकी से लक्ष्मी को पट्टी पढ़ाई– देवी, मैं दरिद्रा के साथ थोड़ी दूर चला तो असलियत सामने आ गई। मैंने वहीं फैसला सुना दिया कि आप लक्ष्मी के मुकाबले रूप-रंग, चाल-ढाल और बात व्यवहार में कहीं नहीं ठहरतीं। इतना सुनते ही वे तुनककर जाने लगीं। मैंने उनकी बड़ी मिन्नत की कि चलकर अपनी बहन से मिल लें। आज रात मेरे यहाँ मेहमान बनकर रहें, लेकिन उन्होंने मेरी एक न सुनी।

–ऐसा उनको नहीं करना चाहिए था।– लक्ष्मी अपनी श्रेष्ठता की खुशी में झूमती हुई बोलीं।

–खैर उनकी बात जाने दीजिए।– नगर सेठ ने हाथ जोड़कर याचना की– देवी, आप तो मेरे यहाँ रूकें हीं।

–अच्छी बात है, जहाँ मुझे सम्मान मिलता है मैं वहीं रूकती हूँ।– लक्ष्मी ने जवाब दिया।

–कहते हैं, तब से लक्ष्मी सम्मान के साथ हवेलियों में रहती आ रही है। रही दरिद्रा की बात तो ब्रह्मांड सुन्दरी के भ्रम में खोयी वह लक्ष्मी की छाया से भी दूर भागती है।

●

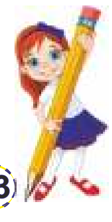

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

स्वच्छ भारत
स्वच्छ
भारत
तुमने बिल्कुल ठीक कहा किट्टी बेटा! बच्चों, स्वच्छता से हमारा तन और मन दोनों निर्मल व स्वच्छ रहते है तथा वातावरण भी शुद्ध रहता है।
टीचर जी, मैं तो अपने घर के अन्दर, बाहर तथा आस –पड़ोस में सफाई का विशेष ध्यान रखती हूँ।
बच्चों आप सभी ने देखा और सुना होगा कि सन्त निरंकारी मिशन भी इस कार्य हेतु हर वर्ष विशेष अभियान चलाकर स्वच्छता और वृक्षारोपण का कार्य करता है।

हाँ! टीचर जी, मैंने टी. वी. पर प्रचार भी देखा था जिसमें लोग सड़क पर झाड़ू लगाकर स्वच्छता अभियान का प्रचार कर रहे थे।
ठीक कहा किट्टी तुमने! बच्चों उनकी इस पहल को हम सभी को अपनाना होगा। क्योंकि भारत हमारा देश है, और हम इसमें रहते हैं। इसकी हर सड़क–गली को साफ रखना हमारा कर्तव्य है।
आप बिल्कुल सही कह रही हो टीचर जी
जी टीचर जी, हम भी इस अभियान में शामिल हो गए हैं और स्वच्छता को अपनाएंगे।
बहुत अच्छा बच्चों! अब से आपका भी कर्तव्य है कि अपने आस–पास कूड़ा इकट्ठा न होने दे, कूड़ेदान का हमेशा प्रयोग करना चाहिए। और सुनो अगर कोई इधर–उधर कूड़ा या गंदगी फैलाता हुआ नजर आए तो उसे मना करो।

टीचर जी! इसके साथ ही हम रविवार को अपने मुहल्ले का भी दौरा करेंगे, और लोगों को स्वच्छता के फायदों के बारे में भी बताएंगे।
बहुत खूब बच्चों। और वैसे भी बच्चों साफ–सफाई के काम में हमें शर्म नहीं करनी चाहिए, शर्म तो गदंगी से करनी चाहिए।
ठीक कहा आपने टीचर जी! स्वच्छता तो हमारी शान होनी चाहिए।

जानकारीपूर्ण लेख : दीपांशु जैन

चहकने वाली चिड़िया : चकदिल

पक्षी जगत में कुछ पक्षी गायक पक्षी भी होते हैं। उन पक्षियों में नर्तकी चिड़िया 'चकदिल' भी है। 'नाचन' या 'चकदिल' हमेशा अपनी पूंछ उठाये एक से दूसरी टहनी पर फुदकती रहती है। इसकी पूंछ पंखे के आकार में फैली रहती है। टहनियों पर लगातार कूदने-फांदने में पूंछ से नृत्य की-सी लय उत्पन्न करने के कारण ही यह 'नाचन चिड़िया' कहलाती है। यह घर, आंगन, बाग, बगीचों, जंगलों, घास के मैदानों के अलावा शोर-शराबे वाली घनी बस्तियों में भी आसानी से मिल जायेगी। हवा में उड़ने वाले कीड़े-मकोड़ों का ये दिनभर शिकार कर खाती रहती है। इसकी आवाज में बड़ी मिठास होती है।

'चकदिल' देखने में सुन्दर, गहरे भूरे रंग की और कबूतर के आकार की होती है। इसकी पलकें, सफेद, सीने के पंखों पर सफेद धब्बे और निचला हिस्सा भी सफेदी लिये होता है। यह मनुष्य जाति से भयभीत नहीं होती। ये जोड़े में और अपने ही क्षेत्र में रहना पसंद करती हैं।

ये नाचते-कूदते समय खुशनुमा सीटियां देती रहती हैं। सीटियों की ध्वनि में कई उतार-चढ़ाव भी होते हैं और मिठास भी होती है। नाचते समय यह पूंछ से कई तरह के हाव-भाव प्रदर्शित करती रहती है।

'नाचन' का घोंसला प्याले के आकार का होता है, जिसमें ये बारीक घास व मुलायम रेशों का प्रयोग करती है। यह टहनियों के अंतिम सिरे पर अपना घोंसला बनाती है। इसके घोंसले मुख्यत: आम, चीकू व अमरूद के पेड़ों पर होते हैं। यह दो या तीन अंडे देती है। अंडे हल्का पीलापन लिए हुए गुलाबी रंग के होते हैं। अंडे के चौड़े वाले हिस्से में एक गहरे भूरा रंग का छल्ला होता है।

कभी-कभी यह फुदकती हुई अचानक रूक जाती है और अपनी पूंछ को पंखे की तरह बार-बार खोलती-समेटती हुई ठुमक-ठुमककर नाचने लगती है। उस समय इसका नृत्य मनोहारी होता है।

यद्यपि इसकी 6 उपजातियां होती हैं परन्तु भारत के पहाड़ी इलाकों में सफेद धब्बे और पंखेनुमा पूंछ वाली नाचिन या चकदिल ही मिलती है, जिसको अंग्रेजी में 'पैराडाइज-फ्लाईकैचर' कहते हैं।

कुछ लोग हिन्दी में इसे 'शाही बुलबुल' भी कहते हैं। इसका आकार 20 सेंटीमीटर का होता है। इसकी अन्य उपजातियां भी उत्तर पूर्व हिमालय की तराई में कहीं-कहीं देखी जाती हैं।

चकदिल की उपजातियों में जहाँ शाही बुलबुल 20 सेमी. की होती है, वहीं राखरंग के मस्तक वाली 12 सेमी., लाल छाती वाली 13 सेमी., टिक्कल्स 14 सेमी. और भौंकने वाली सफेद नाचन 16 सेमी. की होती हैं।

• • •

दो बाल कविताएं : रूपनारायण काबरा

भारत देश महान है

यह मेरा हिन्दुस्तान है।
यह सारे जग की शान है।
हमको रखनी इसकी आन है।।
यह मेरा हिन्दुस्तान है ...

गुलदस्ते के फूल हैं हम सब,
अपने रंग सुवास लिये।
खुशबू फैलाते हैं जग में,
हम इसकी पहचान हैं।।
यह मेरा हिन्दुस्तान है ...

विश्वगुरु भारत बन जाये,
हम सबका अरमान है।
यह मेरा हिन्दुस्तान है,
यह भारत देश महान है।।
यह मेरा हिन्दुस्तान है ...

हम कर्णधार हैं भारत के

हम भारत के नौनिहाल, हम निर्माता हैं नवयुग के।
हम ही हैं भावी नेता, हम कर्णधार हैं भारत के।

भाषा मजहब प्रान्तवाद के, झगड़े दूर करेंगे हम।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, सबको एक करेंगे हम।
राष्ट्र एक है, रूप अनेकों, पुत्र सभी हम भारत के।
हम ही हैं भावी नेता, हम कर्णधार हैं भारत के।।

भ्रष्टाचार अशिक्षा को, हम दूर करेंगे सब मिलकर।
नये समाज की रचना भी हम, कर डालेंगे सब मिलकर।
दुश्मन हमको देख न सकता, हम हैं सैनिक भारत के।
हम ही हैं भावी नेता, हम कर्णधार हैं भारत के।।

मेहनत करके बहा पसीना, माँ की शान बढ़ायेंगे।
मातृभूमि की बलिवेदी पर, अपने शीश चढ़ायेंगे।
हम निर्भय हिम्मत वाले हैं, हम शक्ति पुंज हैं ताकत के।
हम ही हैं भावी नेता, हम कर्णधार हैं भारत के।।

लेख : पुष्पेश कुमार

जिराफ

अफ्रीका में पाये जाने वाले जिराफ का अपना विशेष महत्व है। इसकी गणना विश्व के चार विशालतम जीवों से की जाती है। इसकी ऊँचाई का तो कहना क्या है? जिराफ को महत्व इसलिए दिया जाता है कि इसकी गरदन काफी ऊँची होती है। युवा और वयस्क नर जिराफ की ऊँचाई 10-11 फुट होती है, इसकी अगली दो टांगें, पिछली टांगों की अपेक्षा अधिक लम्बी होती हैं। यही कारण है कि इसका कद काफी ऊँचा होता है। इसका वजन 40 मन से 60 मन तक होता है। जिराफ का जबड़ा प्रकृति ने विशेष रूप में काफी अलग तरीके से बनाया है। इसके होंठ लम्बे-लम्बे होते हैं और इन होंठों पर घने बाल उगे होते हैं, जो बबूल के कांटों से रक्षा करते हैं। जिराफ का सबसे प्रिय भोजन बबूल है। निचले होंठ की अपेक्षा ऊपरी होंठ आगे की ओर बढ़े होते हैं। जीभ खुरदरी और डेढ़ फुट लम्बी होती है। उसकी सहायता से जिराफ झाड़ियों की पतली-पतली टहनियां और पत्ते नोंचकर खाते हैं। जिराफ के सिर पर दो छोटे-छोटे सींग होते हैं, जो उसके सिर के बीचों-बीच उभार के रूप में होते हैं। कुछ जिराफों में दो अतिरिक्त सींग भी पाये जाते हैं।

जिराफ का खुर एक फुट लम्बा होता है और उसके बीच में दरार होती है जिसके कारण वह कठोर भूमि पर चल-फिर पाता है। जिराफ लम्बी टांगों के कारण दलदली मैदानों या नरम धरती पर चल नहीं पाता। वह मामूली दलदलों या नदियों को भी पार नहीं कर सकता है और गिर पड़ता है, किन्तु सख्त खुरों वाली ये टांगें उसका हथियार हैं। इसकी चाल प्रति घंटा 30 मील तक होती है।

जिराफ का मूल निवास स्थान कहाँ है? इस संबंध में जीव-वैज्ञानिकों ने काफी शोध के बाद पाया कि जिराफ के पूर्वजों का मूल स्थान यूरोप या एशिया था। किंतु भूमंडल पर हुई प्राकृतिक उथल-पुथल के कारण यह अफ्रीका में ही सीमित होकर रह गया। जीव-वैज्ञानिकों का मानना है कि जिराफ कोई अति प्राचीन जानवर नहीं बल्कि इसको अस्तित्व में आये मात्र डेढ़ करोड़ वर्ष हुआ है।

आदिम युग में जिराफ का धड़ल्ले से शिकार होता था। इसकी खाल बिस्तर व वस्त्र के रूप में उपयोग में लायी जाती थी। जिराफ की खाल मोटाई में एक इंच से अधिक होती है और काफी मजबूत होती है। प्राचीन काल में लोग उसकी खाल से घोड़ों की बागें, कोड़े और युद्ध में उपयोग होने वाली ढाल आदि बहुत-सी वस्तुएं बनाते थे और उसकी बड़ी-बड़ी हड्डियों से बरतन बनाये जाते थे। नसों और स्नायुओं को रस्सी के रूप में काम मे लाया जाता था और धनुषों पर उन्हीं की बटी हुई डोर चढ़ायी जाती थी। उसकी बारीक रग (नसें) सूखाकर तंतु वाद्यों पर लगायी जाती थी और खूब बजती थी।

एक समय था जब अफ्रीका के घास और झाड़ियों वाले प्रदेशों में जिराफों का साम्राज्य था, किन्तु अब इनकी संख्या निरंतर घटती जा रही है। यही कारण है कि वहाँ की सरकार ने इसके शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया है।

जिराफ सामान्यतः ऐसे मैदानी भाग में पाये जाते हैं, जहाँ वे आराम से बबूल की पत्तियों और

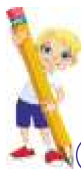

झाड़ियों को अपना आहार बना सके। ऐसे स्थान जहाँ मीलों तक बबूल की कांटेदार झाड़ियां उगी हों, ऐसे स्थान उन्हें काफी आकर्षित करते हैं। जिराफ नमीयुक्त मैदान और नदियों से काफी दूर रहता है क्योंकि वे छोटी से छोटी नदी को भी पार नहीं कर सकते।

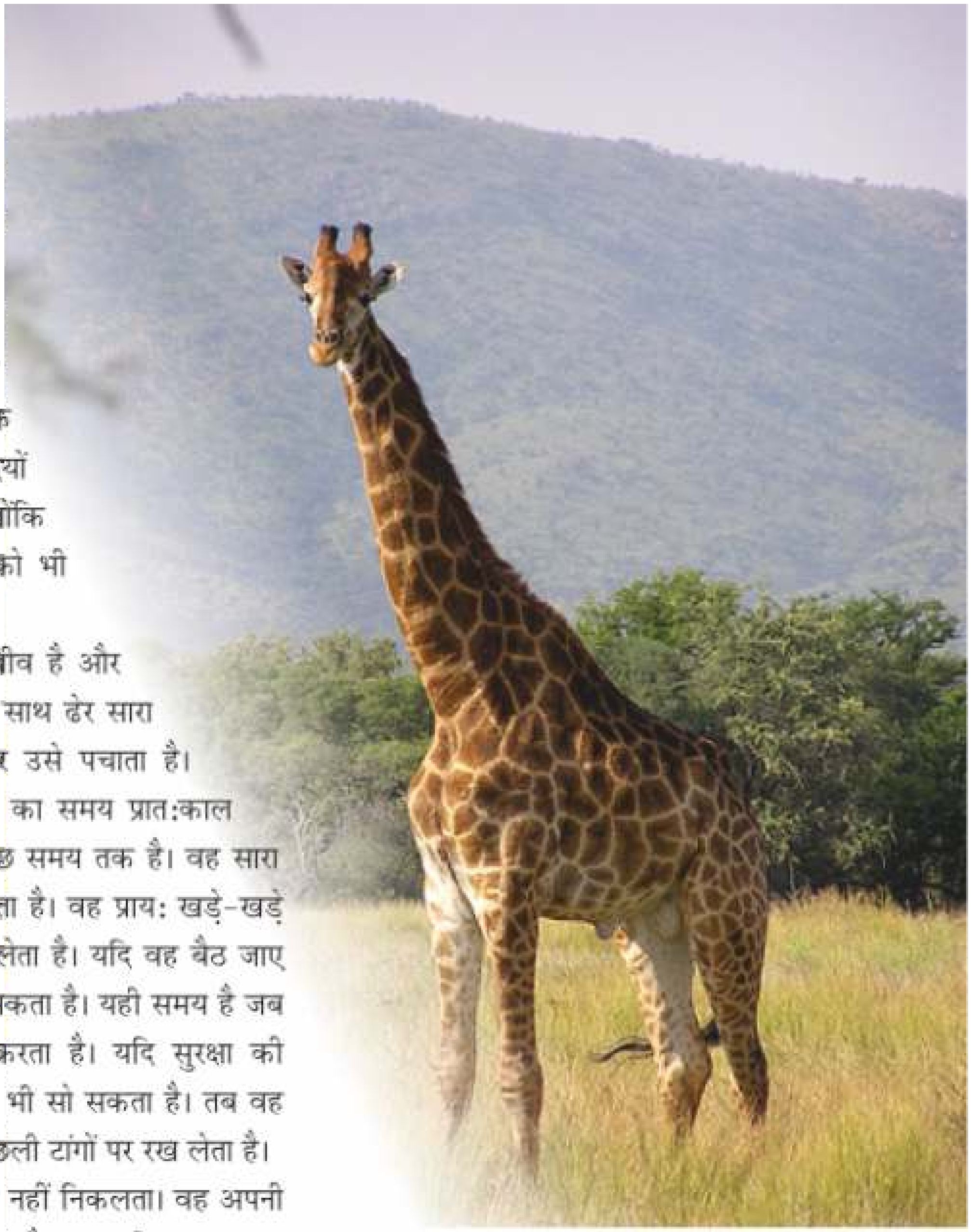

जिराफ शाकाहारी जीव है और गाय भैंसों की तरह एक साथ ढेर सारा चारा खाकर जुगाली कर उसे पचाता है। जिराफ का भोजन करने का समय प्रात:काल या सूर्य अस्त होने से कुछ समय तक है। वह सारा दिन छाया में आराम करता है। वह प्राय: खड़े-खड़े ही अपनी नींद पूरी कर लेता है। यदि वह बैठ जाए तो आसानी से उठ नहीं सकता है। यही समय है जब शेर इस पर आक्रमण करता है। यदि सुरक्षा की गारंटी हो तो वह लेटकर भी सो सकता है। तब वह अपनी गरदन मोड़कर पिछली टांगों पर रख लेता है।

जिराफ कभी अकेले नहीं निकलता। वह अपनी टोली के साथ ही रहता है। वृद्ध जिराफ जवान जिराफों के साथ नहीं जाकर किसी सघन झाड़ी में अकेले आराम करते हैं।

मादा जिराफ गर्भ ठहरने के 395 से लेकर 425 दिन बाद बच्चे को जन्म देती है। अधिकांश मादा जिराफ एक बच्चे को जन्म देती हैं। कभी-कभी वह जुड़वां बच्चों को भी जन्म देती हैं। नवजात बच्चे का वजन 110 से 140 पौंड तक होता है। कद प्राय: साढ़े पांच फुट से साढ़े छह फुट तक होता है। एक वर्ष के भीतर ये बच्चे दस फुट के हो जाते हैं। बच्चे के जन्म लेने के बाद मादा जिराफ अपने बच्चे को दूध पिलाने लगती है और दो घंटे के भीतर अपने माता के पीछे चलने लगते हैं। नौ माह तक बच्चे माँ के दूध पर निर्भर रहते हैं। बच्चा जब तक वयस्क नहीं हो जाता तब तक माता-पिता उसकी देखभाल करते हैं।

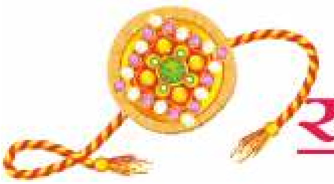

रक्षाबंधन पर विशेष लेख

प्रस्तुति : मूलचन्द कर्दम

रक्षाबन्धन : पवित्र त्योहार

रक्षाबन्धन का पर्व सदियों पुरानी उन यादों को ताजा करता है जिनसे हम आज भी शिक्षा और प्रेरणा ले सकते हैं। यह एक ऐसा पावन पर्व है जो भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को पूरा आदर और सम्मान देता है। सदियों से बहनें भाई के लिए सूर्य की तरह ऊर्जावान और शक्तिशाली बनने की कामना करती आई हैं।

प्रतिवर्ष अगस्त अर्थात् श्रावण माह की पूर्णिमा के दिन मनाये जाने वाले रक्षाबन्धन पर्व की पौराणिक मान्यता भी है। गीता उपदेश के अनुसार जब संसार में नैतिक मूल्यों में कमी आने लगती है तब भगवान शिव प्रजापति ब्रह्मा द्वारा धरती पर पवित्र धागे भेजते हैं, जिन्हें बहनें मंगलकामना करते हुए भाइयों की कलाई पर बांधती हैं और भगवान उन्हें नकारात्मक विचारों से दूर रखते हुए दुख और पीड़ा से निजात दिलाते हैं।

एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन इंद्राणी ने इन्द्र को और यमी (युमना) ने यम को राखी बांधी थी। एक बार असुरों तथा देवताओं के बीच भीषण युद्ध हुआ और उसमें देवताओं को पराजय मिली। देवताओं के राजा इन्द्र दुखी होकर देवताओं के गुरु बृहस्पति के पास गए और बोले, ''अच्छा होगा यदि मैं अपना जीवन समाप्त कर दूं।'' इसी बीच इन्द्राणी वहाँ आई और उन्होंने सूती धागा इन्द्र की कलाई पर बांध दिया। इन्द्र दोबारा लड़ाई के मैदान में गए और असुरों को करारी शिकस्त दी। ऐसी है इस पावन बन्धन की महिमा।

द्वापर युग में भी इस पर्व की महिमा का बखान मिलता है। एक बार युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से पूछा कि वह महाभारत के युद्ध में कैसे बचेंगे? इस पर श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया था– ''राखी का धागा ही तुम्हारी रक्षा करेगा।''

एक अन्य कथा भी भगवान विष्णु तथा असुरों के राजा बलि से सम्बन्धित है। राजा बलि को दिए एक वचन के कारण भगवान विष्णु बैकुंठ छोड़ बलि के राज्य की रक्षा के लिए चले आए। तब देवी लक्ष्मी ने श्रावण माह की पूर्णिमा के दिन राजा बलि की कलाई पर पवित्र धागा बांधा और उसके लिए मंगलकामना की। बलि ने देवी को अपनी बहन मानते हुए उसका सौभाग्य लौटाने की कसम खाई। देवी लक्ष्मी के कहने पर उन्होंने भगवान विष्णु से बैकुंठ वापस जाने की विनती की।

रक्षाबन्धन को लेकर कई ऐतिहासिक कथाएं भी हैं। जब स्त्रियों ने अपनी रक्षा के लिए राजाओं की कलाई पर इस रक्षासूत्र को बांधा था। रानी कर्णावती की कहानी जगजाहिर है। गुजरात के सुलतान ने चित्तौड़ पर आक्रमण करने का ऐलान कर दिया था। चित्तौड़ की रानी कर्णावती को कुछ सूझ नहीं रहा था। चारों ओर खून की होली खेली जा रही थी। युद्ध शुरू हुआ तो सुलतान की लाव-लश्कर से लैस सेना के सामने चित्तौड़ की सेना के पैर उखड़ने लगे। औरतें जौहर करने को मजबूर हो गईं। तभी महारानी कर्णावती को भाई-बहन के पवित्र त्योहार रक्षाबन्धन का ख्याल

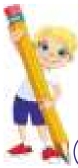

आया और उन्होंने बादशाह हुमायूं को भाई सम्बोधित करते हुए एक सन्देश के साथ राखी भिजवा दी। बादशाह को जैसे ही रानी कर्णावती का संदेश और राखी मिली, वह गद्‌गद्‌ हो गया। उसे मालूम था कि औरतें इस पवित्र त्योहार को क्यों मनाती हैं। इस रक्षासूत्र की लाज रखते हुए बादशाह हुमायूं चित्तौड़ की रक्षा के लिए तुरन्त अपनी विशाल सेना समेत निकल पड़ा।

सिकन्दर व पोरस से सम्बन्धित एक और कथा भी काफी लोकप्रिय है। 300 वर्ष ईसा पूर्व की घटना है, जब सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण कर दिया था। पहले हमले में सिकन्दर को पोरस ने करारी शिकस्त दी। परास्त सिकन्दर परेशान रहने लगा। पत्नी से उसकी यह परेशानी देखी न गई और उसने तुरन्त योजना बनाई। वह राखी के त्योहार के बारे में बहुत कुछ सुन चुकी थी। वह तुरन्त राजा पोरस के पास गई और उसके सामने भाई बनने का प्रस्ताव रखा। राजा पोरस ने उसे रक्षा का वचन दिया और परिणामस्वरूप जब सिकन्दर ने दोबारा हमला किया तो राजा पोरस ने अपने भातृ (भाई) धर्म का निर्वाह किया।

राखी का त्योहार अनेकता में एकता की भावना को दर्शाता है। उत्तर भारत में यह त्योहार सबसे अधिक धूमधाम से मनाया जाता है।

राखी का त्योहार मुम्बई के कई समुद्री इलाकों में नारियल पूर्णिमा या कोकोनट फुलमून के नाम से भी जाना जाता है।

बुंदेलखंड में इस दिन को कजरी पूर्णिमा या कजरी नवमी भी कहा जाता है।

रक्षाबन्धन का यह त्योहार न केवल बहन व भाई के रिश्ते को मजबूत बनाता है बल्कि इससे पूरे समाज के नाते-रिश्तों की डोर भी मजबूत होती है।

पढ़ो और हँसो

तीन व्यक्तियों को कहीं से तीन बम मिल गये।

एक व्यक्ति बोला– चलो इन्हें पुलिस को दे दें।

दूसरा व्यक्ति बोला– हाँ, हाँ ठीक है लेकिन रास्ते में एक फट गया तो?

तीसरा बोला– तो कह देंगे कि दो ही मिले थे।

सुनीता : (सपना से) क्या बताऊँ, मेरा मुन्ना तो हरदम अंगूठा ही चूसता रहता है। कोई उपाय बताओ?

सपना : तुम ऐसा करो। अपने मुन्ने को एक ढीली निक्कर पहना दो। दिनभर वह अपनी निक्कर को ही सम्भालता रहेगा और अंगूठा चूसने की आदत अपने-आप छूट जायेगी।

कवि : आपको मेरी कविता पसन्द आई?

योगिता : मुझे उसका अन्त सुन्दर लगा।

कवि : किस जगह?

योगिता : जब आपने कहा कि 'कविता समाप्त हुई।'

– प्रवीण (दिल्ली)

बुद्धूराम ने अपनी सगाई तोड़ दी क्योंकि उसे पता चला कि जिस लड़की से उसकी शादी हो रही है, उसकी पहले कभी सगाई नहीं हुई। उसने सोचा कि जिस लड़की की पहले किसी से सगाई नहीं हुई, उससे वह सगाई क्यों करे?

एक नौकर ने अपने कंजूस मालिक से कहा– 'साहब' मैंने रात को ख्वाब देखा कि आपने मुझे पचास रुपये एडवांस दिये हैं।

मालिक ने कहा– ठीक है, अगले महीने तुम्हारी तनख्वाह से काट लिए जाएंगे।

पत्नी : अजी, क्या यह सच है कि रुपये-पैसे भी बोलते हैं?

पति : हाँ, कहते तो ऐसा ही हैं।

पत्नी : तो फिर आप दफ्तर जाने से पहले मुझे कुछ पैसे दे जाना, मैं घर में अकेली बैठी बोर होती रहती हूँ।

सब्जी बेचने वाले के घर पर बच्चा हुआ तो एक महिला ने कहा– बधाई हो, बच्चा कैसा है?

–एकदम ताजा है, बहन जी!– सब्जी बेचने वाले ने जवाब दिया।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

संता ने सोये हुए शेर को लात मारकर जगाया और बंता से बोला– बंता भाग।

बंता बोला– मैं क्यों भागूं। लात मैंने थोड़े ही मारी है।

चूहा : (बिल्ली से) बिल्ली मौसी! आज तुम्हारी मेरे यहाँ दावत है।

बिल्ली मौसी : जरूर–जरूर आऊँगी तुमने बुलाया जो है।

बिल्ली मौसी शाम को आई और चूहे से बोली– म्याऊँ–म्याऊँ।

यह सुनकर चूहा बोला– रूको–रूको जरा मैं बिल में छुप जाऊँ।

–प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

डॉक्टर : पिछली बार याददाश्त बढ़ाने के लिए जो दवा ले गये थे उससे कुछ फर्क पड़ा?

मरीज : अभी तक कुछ फर्क नहीं पड़ा, रोज दवा लेना ही भूल जाता हूँ।

एक साहब ने बड़ी देर तक ट्रेन के साथ भागने के साथ ट्रेन पकड़ ही ली। अंदर बैठे हुए यात्रियों ने कहा– बड़ी हिम्मत की आपने। व्यक्ति बोला– भाई हिम्मत क्या की, जिसको चढ़ाने आया था वह तो स्टेशन पर ही रह गया। **– स्नेहा (ठाकुरपुरा, अम्बाला)**

हनी फिजिक्स का एग्जाम देने गया, पेपर में सवाल पूछा गया– कौन–सा लिक्विड गर्म करने पर सौलिड बन जाता है?

हनी का जवाब था– बेसन के पकौड़े।

एक ट्रक दूसरे ट्रक को रस्सी से बाँधकर खींच रहा था। राह चलते एक व्यक्ति को हँसी आ गई। वह कहने लगा– हे भगवान एक रस्सी को ले जाने के लिए दो–दो ट्रक। **–रजित (ठाकुरपुरा, अम्बाला)**

किरायेदार : (मकान मालिक से) भाई साहब, आपने कैसा मकान मुझे किराये पर दिया है? वहाँ तो चूहे ही दौड़ते रहते हैं।

मकान मालिक : तो क्या इतने कम पैसों में तुम घोड़ों की रेस देखता चाहते हो।

एक बार बंटी, संटी और प्रखर एक बाइक से जा रहे थे।

तभी ट्रैफिक पुलिस वाले ने हाथ दिया।

प्रखर ने कहा– दिख नहीं रहा है, पहले से तीन बैठे हैं, तुम कहाँ बैठोगे?

– दीपक कुमार 'दीप' (रेणुकूट, सोनभद्र)

कभी न भूलो

★ मनुष्य का गौरव और आत्मसम्मान उसकी सबसे बड़ी कमाई होती है। अत: सदा इनकी रक्षा करनी चाहिए। **– महाराणा प्रताप**

★ विद्या के साथ जीवन का आदर्श ऊँचा न हुआ तो पढ़ना व्यर्थ है। **– मुंशी प्रेमचन्द**

★ श्रम सफलता का मूल मंत्र है। **– जवाहरलाल नेहरु**

★ माँ सौ गुरुओं से भी अधिक शिक्षा दे सकती है। **– छत्रपति शिवाजी**

★ जो दूसरों की बुराई करता है वह अपनी बुराई करता है।

★ अतीत पर ध्यान मत दो, भविष्य के बारे में मत सोचो, अपने मन को हमेशा वर्तमान में केन्द्रित करो। **– महात्मा बुद्ध**

★ अच्छे गुण सदैव मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करते हैं। **– जॉनसन**

★ जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है न शोक करता है वह भक्त परमात्मा को अधिक प्रिय है। **– वेदव्यास**

★ केवल निष्पक्ष और ईमानदार लोगों के काम मधुर सुगंध देते हैं और फूल के समान खिलते हैं।**– शर्ले**

★ ज्ञान गहरे सागर के समान है। **– हरदयाल**

★ जो कार्य आपके सामने है उसे शीघ्र एवं निष्कपट भाव से करना ही कर्तव्य है। यही आपके अधिकार की पूर्ति है। **– गेटे**

★ जब-जब हम गिरते हैं, हमें आगे चलने का तजुर्बा हो जाता है। **– सुकरात**

★ पड़ोसी से प्रेम करने वाला विपत्ति में भी सुखी रहता है, जबकि पड़ोसी से वैर करने वाला सम्पत्ति में भी दु:खी रहता है। **– रामप्रताप त्रिपाठी**

★ मनुष्य उतना ही महान होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शान्ति का विकास करेगा। **– स्वेट मार्डेन**

★ सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता। **– चिल्सन**

★ दया और प्रेम भरे शब्द छोटे हो सकते हैं लेकिन वास्तव में उनकी गूंज अनन्त होती है। **– मदर टेरेसा**

★ एक श्रेष्ठ व्यक्ति कथनी में कम, करनी में ज्यादा होता है। **– कन्फ्यूशियस**

★ क्षमा, दया और करुणा मनुष्य के अनमोल गुण हैं **– भगवद्गीता**

★ मनुष्य कितना भी बड़ा क्यों न बन जाए उसे हमेशा अपना अतीत को याद करते रहना चाहिए। **– ईश्वरचन्द्र विद्यासागर**

★ सेवा से शत्रु भी मित्र हो जाता है। **– वाल्मीकि**

★ गरीब वह नहीं है जिसके पास कम है, बल्कि धनवान होते हुए भी जिसकी इच्छा कम नहीं हुई है, वह सबसे गरीब है। **– विनोबा भावे**

– संकलनकर्ता : रीटा (दिल्ली)

बाल कविता : महेन्द्र राजपाल

जय-जय भारत देश महान

जिसकी गौरव गरिमा पर है,
बच्चे-बच्चे को अभिमान।
गंगा यमुना ब्रह्मपुत्र है,
गाती जिसकी जय के गान।
सत्य-अहिंसा तथा प्रेम का,
गीता तथा वेद का ज्ञान।

जय-जय भारत देश महान।
जय-जय भारत देश महान।।

राम-कृष्ण गौतम गाँधी से,
जिस पावन धरती पर आते।
दया-विवेकानन्द सदृश हैं,
सत्य धर्म का पाठ पढ़ाते।
हिमगिरि जिसका स्वर्ण मुकुट है,
हिन्द महासागर है मान।

जय-जय भारत देश महान।
जय-जय भारत देश महान।।

पुनः बनेगा गुरु विश्व का,
दे मानवता का संदेश।
जिसकी संस्कृति आभा से है,
महामंडित यह भारत देश।
जय जवान और जय किसान,
जय विज्ञान और जय भगवान।

जय-जय भारत देश महान।
जय-जय भारत देश महान।।

जून अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **प्रियंका** 13 वर्ष
लिम्बच माता मंदिर,
भागोल, शेरा, गोधरा (गुजरात)

2 **पायल** 13 वर्ष
चमन विहार, लोनी,
जिला : गाजियाबाद (उ.प्र.)

3 **साहिल** 14 वर्ष
योगेश्वर सोसाइटी, पार्वती नगर,
गोधरा (गुजरात)

4 **भाविका** 13 वर्ष
योगेश्वर सोसाइटी, भुरवा रोड,
ड्रीम इंडिया स्कूल के पास,
गोधरा (गुजरात)

5 **निशांत चौहान** 11 वर्ष
चौहान निवास, रिकांग पिओ,
जिला : किन्नौर (हि.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं—

सेफाली गौतम (सुरैला, बस्ती), यशिका (पावर हाउस, अहमदाबाद), जिया (अवधपुरी कालोनी, जबलपुर), अमनप्रीत (झाकड़ी, शिमला), मयंक कुमार (धूरी, संगरूर), **श्रेय** (मोहाली), **उन्नति** (अकालगढ़, यमुनानगर), **खुशी** (नकोदर, जालंधर), **विवेक, अद्वितीय** (सुन्दर नगर, अजमेर), **ऋद्धि** (पालम कालोनी, दिल्ली), **काव्य, दीपाक्षी** (तपा मंडी, बरनाला), **ऐंजल, ऋतु कुमारी, कंचन, ममता, दीपा, अजय कुमार, लक्ष्मी** (लोनी, गाजियाबाद), **कृष्णा, दक्ष, मनन, ओम, विया** (गोधरा), **सुमति वर्मा** (केन्द्रांचल कालोनी, कानपुर), **श्लोक** (2 ट्रस्ट लेन, भटिण्डा), **मुक्ति, चेतन, सुहानी** (आलमपुरा, महोबा), **समीप कुमार** (सुरैला, बस्ती)।

अगस्त अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 सितम्बर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अक्टूबर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

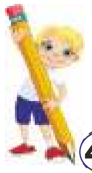

रंग भरो

—प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

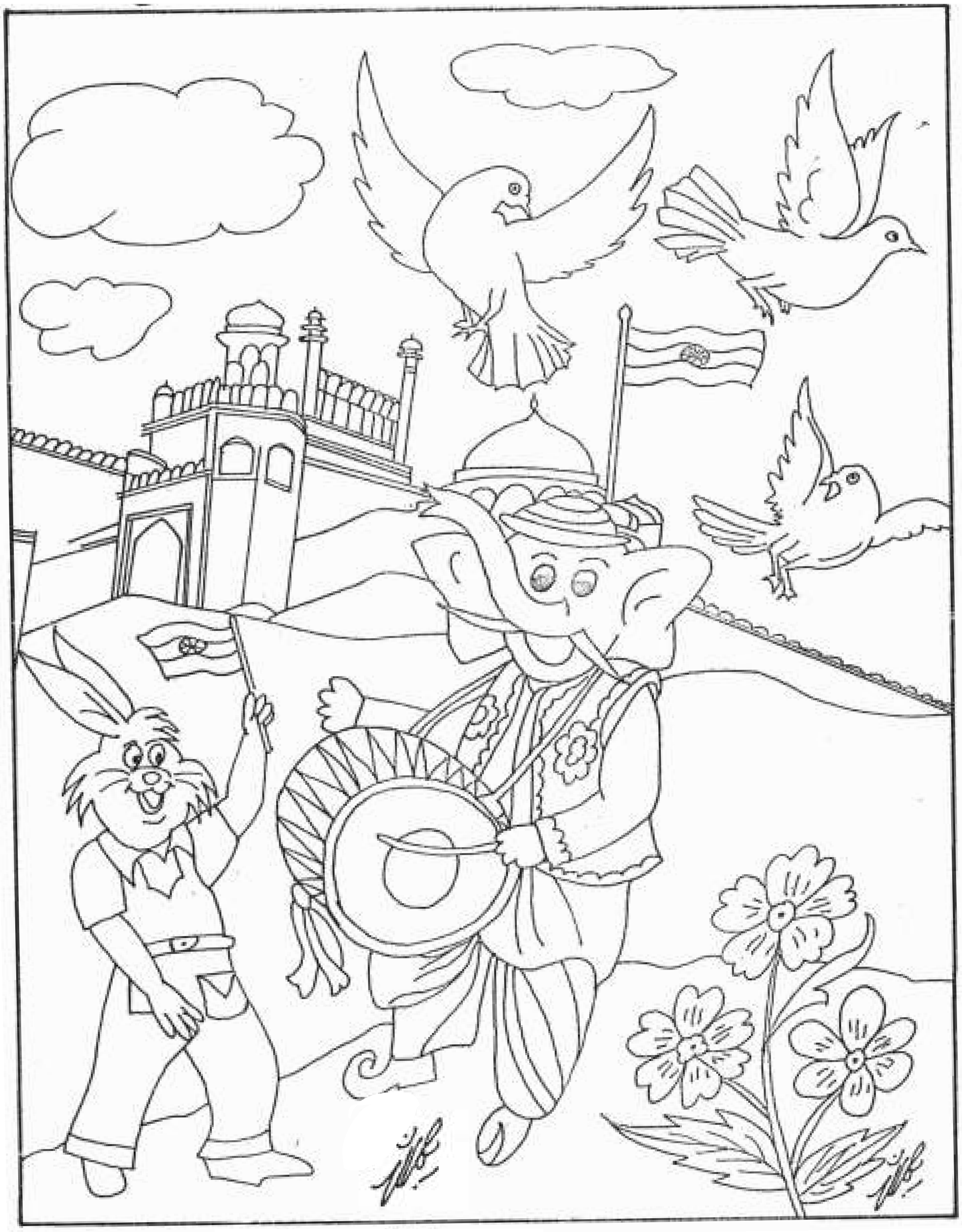

नाम .... आयु ....

पुत्र/पुत्री ....

पूरा पता ....

....

....पिन कोड ....

आपके पत्र

हँसती दुनिया का जून अंक मिला। कहानियां 'पिता की सीख (परशुराम संबल) तथा 'करोगे सेवा तो पाओगे मेवा' (मेघा जैन) पसन्द आई।

'ऐसे शुरू हुआ अमराइयों का चलन' (दीपांशु जैन) भी जानकारी अच्छी लगी।

चित्रकथाओं और अन्य स्तम्भों ने हमेशा की तरह पत्रिका की शोभा बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कुल मिलाकर ये अंक गर्मी में बारिश की पहली बूंद की तरह लगा जिसके स्पर्श से ही मन प्रसन्न हो उठता है।

– महेन्द्र भाटिया (अमरावती)

मैं हँसती दुनिया की पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। इसमें प्रकाशित कहानियां और कविताएं बहुत रोचक और शिक्षाप्रद होती हैं।

'दादाजी' एवं 'किट्टी' (चित्रकथा) भी रोचक एवं शिक्षाप्रद होती हैं।

मैं खुद भी यह पत्रिका पढ़ती हूँ और अपनी सहेलियों तथा भाई-बहनों को भी पढ़ाती हूँ। हमें इससे बहुत अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं।

– अंजलि शर्मा (ग्वालियर)

मैं हँसती दुनिया का पाठक हूँ। इसमें प्रकाशित प्रेरक-प्रसंगों से मुझे और मेरे परिवार के सदस्यों को प्रेरणा मिलती है। अन्य मनोरंजक एवं लाभदायक लेख भी विद्यार्थियों और पाठकों का सही मार्गदर्शन करते हैं।

यह पत्रिका पाठकों को सार्थक मानसिक खुराक प्रदान करती है। इस उत्कृष्ट पत्रिका के लिए मैं सम्पादक जी एवं सभी लेखकों का धन्यवाद करता हूँ।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी प्यारी हँसती दुनिया, दुनिया के कोने-कोने में पहुँचे।

– यूनीश खुराना (गुड़गांव)

दो बाल क्षणिकाएं

बादल

हवा चली है ठण्डी ठण्डी,
बादल को दिखलाती झण्डी।
बादल को लेकर लायेगी,
बरस बरस कर ये जायेगी।।

बिछेगी बन हरी चादर,
मखमल बिछी धरती पर।
मौसम बदला सारा है,
लगता प्यारा न्यारा है।।

फुटबॉल

खेल वह खेलें टांगों से,
हाथ लगाए तो फाउल।
फुटबाल को जान लीजिए,
नहीं करना है ये भूल।।

खेल के रोमांच में आता,
टांगों वाली करामात।
फिर खेलो मनोयोग से,
कभी न होगी मात।

प्रस्तुति : गफूर 'स्नेही'

kids Nirankari

spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी, 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)